

فرمائين ٿا ته اسان دنيا جي هر قسم جي رسائن کي آزمايو آهي، پر نام جي برابر ڪا به رسائن ڪانه آهي. ان جي هڪ رٿي به جيڪڏهن شريرو پر پرگهت ٿي پوي ته اسانجو شريرو سونو ٿي پوي. يعني ته هن مانس جنم وٺڻ جو مقصد پورو ٿي وڃي. اهڙيءَ طرح گورو نانڪ صاحب سمجھائين ٿا:—

”پار ڪيا وٽ سمهال لٿي گورو سرجهي هوئي،

نام پدارت امل سا گورو مک پاوي ڪوئي“

جن کي هن چيز جي پرک ۽ قدر آهي اهي انکي ڏاڍو سنڀالي سنڀالي رکندا آهن ۽ اهو قدر به گورمکن جي صحبت ۽ سنگت ڪرڻ سان ايندو آهي. جيڪڏهن اسانکي ڪو قيمتي هير و هٿ لڳندو آهي ته اسان ان کي ڪهڙيءَ ريت سنڀالي سنڀالي لڪائي رکندا آهيون. ڪجهه به ويڙهي مڙهيو پيئين به بند ڪري رکندا آهيون. انجي چاچي هميشه چاچيءَ سان لڳائي رکندا آهيون. پنهنجي زال ۽ ٻارن کي به خبر نه ڏيندا آهيون ته مٿان اهي ڪم نه ڪري ڇڏين. اهو هير و هٿ هڪ معمولي دنيا جي چيز آهي جنهنجي قيمت وري به ڪٿي سگهون ٿا. پر اهو نام جنهن جي اسان قيمت ڪٿي ٿي نه ٿا سگهون، جنهنکي مهاڻا امله ۽ املڪ سڏين ٿا، جنهنکي پاڻي اسين خود مالڪ بڻجي پئون ٿا، انجي ڪيتري سنڀال ڪرڻ گهرجي انجو اندازو خود اوهين لڳائي سگهو ٿا. حضرت عيسوي به بائيبل ۾ فرمائين ٿا ته انهيءَ دولت جا گراهڪ عام ڪونهن. اهي وڏي قيمت وارا. يعني بي بها موني ڪتن ۽ سوئرن اڳيان نه اچن ٿا. اهي ان جو قدر نه ڄاڻي سگهندا.

سوامي جي مهاراج جن فرمائين ٿا:—

”پر پٽ پر پٽ گورو کي ڪرنا نام رسائن گهٽ پر ڏرنا.“

جهڙيءَ طرح رسائن اسانجي جسم ۾ وڃي جسم جي

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

کے لئے یہ کہ وہ ایک ہی جگہ پر رہیں اور ایک ہی جگہ پر رہیں۔

၁။ နေပြည်တော်၊ ၁၉၇၁ ခု၊ ဇူလိုင်လ ၁၀ ရက်

[illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

၁၂။ အထက်ပါအတိုင်း နေရာအားလုံး၌ အောက်ပါအတိုင်း နေရာအားလုံး၌

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
 श्रीकृष्णार्चनं सर्वपापहर्त्रम् ।
 श्रीगुरुभक्त्या यत्प्रणम्यते तत् ।
 श्रेयसाप्तदशैरुपमात्मनाम् ।
 श्रीगुरुभक्त्या यत्प्रणम्यते तत् ।
 श्रेयसाप्तदशैरुपमात्मनाम् ।

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

၁၈၂၁ ခု၊ ဇူလိုင်လ ၁၀ ရက်နေ့၊ နေပြည်တော်၊ မြန်မာနိုင်ငံတော်

[illegible]

“በግንዛቤ ያለው ሕግ አይደለም፤ ሕግ የሚባለው ሕግ የሆነው ነው።”

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[Faint, illegible handwritten notes]

—*Chrysomelidae*. —*Coccinellidae*.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

משה ואלה שמות בני ישראל אשר באו מצריפט

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

ತೆರಿಗೆಯಲ್ಲಿರುವ ಅನೇಕ ಪ್ರಾಣಿಗಳಿಗೆ ಆಹಾರವಾಗಿರುವುದರಿಂದ

(Faint handwritten notes at the bottom of the page)

[illegible]

1991

يعني نه جيڪي شخص شبد يا نام جي ڪوج نٿا ڪن انهن کي نه هن دنيا ۾ ڪٿي نڪاڻو آهي ۽ نه ٻيءَ دنيا ۾ ڪر نڪاڻو ملي سگهندو. جهڙي طرح ڪنهن خالي گهر ۾ ڪو ڪانءُ ڪٽي سڄو ڏينهن پيونجي ٿي پر انکي کاڌي لاءِ ڪجهه به نه ملندو. اهڙيءَ طرح اسين هن چوراسيءَ جي جيلخاني ۾ پيا ڦرون. اهڙا شخص جي شبد يا نام جي ڪوج نٿا ڪن سي پنهنجو دين ۽ دنيا ٻئي گنوائين ٿا. حضرت عيسيٰ به شبد يا نام جي مهما بنسبت ٻڌائين ٿا :

“Whosoever speaketh against the Holy Ghost, it shall not be forgiven him, neither in this world, neither in the world to come.” (Matthew 12:32)

يعني جي شخص ان کان مک موڙين ٿا ۽ شبد جي ننڍا ڪن ٿا انهنجو گناهه نه هن دنيا ۾ معاف ٿي سگهندو ۽ نه ٻيءَ دنيا ۾. ڇاڪاڻ ته نام جي ڪمائي ڪري ٿي اسين جنم جنماترن جي ديهه جي بنڌن کان چوٽڪارو پاڻي واپس وڃي پرماتما سان ملي سگهون ٿا. تنهنڪري مهاتما سمجهائين ٿا ته ان نام جي بخشيش کي پنهنجي اندر ئي هضم ڪرڻ گهرجي. ڪوڏين وانگر ڪڙڪاڻ نه گهرجي. اسانکي نام جي ڪمائي مان وڏائي حاصل ڪرڻ لاءِ نه ڪرڻي آهي. رڌي سڌي، چپ ٽپ، پوڄا پاڪ، دان پچ وغيره انهن سڀني جو جيڪو ڦل آهي سو سڀ شبد يا نام جي ڪمائيءَ ۾ اچي وڃي ٿو. جڏهن ته چوندا آهن ته ”هاڻيءَ جي پير ۾ سڀ جو پير.“ جنهن وقت اسان جي زبان تي رات ڏينهن ان پرماتما جو نام چڙهيل آهي يعني اسين ان مالڪ جي نام جي سمورن ۾ لڳل آهيون ته ان کان وڌيڪ پير ڪهڙو چپ ٿيندو؟ جنهن وقت اسين پنهنجو پاڻ کي ان مالڪ جي حوالي ڪريون ٿا ۽ ان جي رضا ۾ راضي آهيون ته ان کان

၂၄၆ ရွာကြီးရွာ

የጥቅም ሆኖ የሚያገለግል ነው።

۱۰۸

כיח ז לא ת יר יחיד

၂၀၁၆ ခုနှစ် ဇူလိုင်လ ၁ ရက်နေ့

[illegible]

၇၃၆။ တစ်ဦး၏ အမည်မှာ ဂျွန် ဟု ခေါ်ဝေါ်သည်။

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

၁။ အထွေထွေအကျဉ်းချုပ်

၁၈၇၆ ခု၊ မတ်လ ၂ ရက်

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

وہی ہے جس نے ان کو اپنا گھر بنا لیا ہے۔

[illegible][illegible]

4. $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$ 1/4

செய்து கொடுத்திருக்கிறார்கள். இதைப் பற்றி நான்
கேள்வி கேட்க விரும்புகிறேன்.

17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 846. 847. 848. 849. 850. 851.

[illegible]

၂၂။

"...
..."

[illegible]

١٠٠

१०॥ ५३॥ ४६॥ ३९॥ ३२॥ २५॥ १८॥ ११॥ ४॥

"Ye Worship ye know not what."

1=5:

[illegible][illegible]

چاهيون ٿا ۽ واپس وڃي پرماتما سان ملڻ چاهيون ٿا ته اسان لاءِ صرف نام جي ڪمائيءَ جو رستو ئي کليل آهي. ڪاڇو ۾ اچي مهاڻائن ڏاڍو ڪولي نام جو پرچار ڪيو آهي. اسانجو من اسانکي ان شيد يا نام جي ڪمائيءَ طرف وڃڻ تي ڪونه ٿو ڏئي. بلڪ هميشه پوڄا پاٽ، جپ تپ، دان پچ وغيره ۾ ئي ڦاسائي رکي ٿو. گورو نانڪ صاحب فرمائين ٿا:

”پوڄا ڪري سب لوڪ سنتو، من مک ٿاڻي نه پائي،
شيد مري من نرمل سنتو، ايه پوڄا ٿاڻي پائي.“

يعني اسين دنيا جا جيو پنهنجي پنهنجي عقل موجب ان پرماتما جي پگتي ڪرڻ جي ڪوشش برابر ڪريون ٿا ڇاڪاڻ ته اسانجي آتما جو لاڙو پنهنجي اصل يعني پرماتما طرف زور لڳائي ٿو. ان اثر هيٺ اچي اسين پرماتما کي ڳولهيون ٿا ليڪن من جي چرڻ موجب پگتي ڪريون ٿا. اها پگتي اسانکي ڪڏهن پنهنجي نڪاڻي تي نه پهچائيندي. اسانجو نڪاڻو سڳند آهي ۽ من جي حد ٻاهر ڏيس ٿاڻين پوري ٿي وڃي ٿي. شيد يا نام جي ڪمائي ڪرڻ سان ئي اسانجو من نرمل ٿئي ٿو ۽ اها نام جي ڪمائي ئي اسانکي پنهنجي اصلي نڪاڻي يعني اصلي گهر سڳند ۾ پهچائي ٿي. هر ڪا پگتي اسانکي پرماتما سان نه ٿي ملائي صرف نام جي ڪمائي ئي مالڪ ٿاڻين پهچائي ٿي. سوامي جي مهاراج جن فرمائين ٿا:

”اب به ديه ملي ڪر پا سي، ڪرو پگتي جو ڪرم دها.“
يعني هيءُ منش ديه مالڪ جي وڏي بخشش سان ملي آهي. ان انساني جامي ۾ ويهي اها پگتي ڪريون جا صرف شيد يا نام جي ڪمائي آهي ۽ جنهن سان ڪرم جو سلسلو ختم ٿئي ٿو. گورو نانڪ صاحب سمجهائين ٿا:

”پوڄا ڪري پر بد نهين جاني، دوجي پاڻي مل لائي.“
يعني اسانکي اصلي پگتي ڪرڻ جي طريقي جي خبر ئي

۱۰۷
 اسان جي آتما طوطو آهي ۽ هي شرير هڪ پڇرو آهي.
 جهڙيءَ طرح طوطو پڇري سان پيار لڳائي قسمين قسمين
 بوليون ٻولي ٿو آهي اهڙيءَ طرح اسان جي آتما به هن شرير
 سان پيار لڳائي ويٺي آهي. ان اندر ويهي ڪڏهن روئي
 ٿي، ڪڏهن ڪلي ٿي ۽ ڪڏهن سک نه ڪڏهن دک
 محسوس ڪري ٿي. جيڪڏهن اسان جي آتما هن شرير جو
 پيار ڇڏي ڏئي ۽ ان جي اندر پرامنا جيڪو سچ يا شبد
 جو پوڄن رکيو آهي اهو کائڻ لڳي ۽ ان شبد روپي اعراف
 کي پيچڻ شروع ڪري نه هيءَ هميشه واسطي هن ديهه جي
 ٻڌن کان آزاد ٿي پري. گورو نانڪ صاحب هڪ تمام
 سٺو مثال ڏيئي سمجهائين ٿا:—

انڪ گرم ڪيئي بهتيري جو ڪيچي سو ٻڌن پيري.
 ڪ رتا بيج بيجي نهين جهي سڀ لاهه مول گمراييدا.
 ڪلجڪ ۾ ڪيئن پرڏانا گرومڪ جهيئي لائي ڏيانا.
 آپ تري سگلي ڪل ٿاري هر درگه پت ستن جائيدا“
 نام جي ڪمائيءَ کانسواءِ اسان جيڪي به ساڌن يا طريقا
 مڪتي پائڻ لاءِ اختيار ڪريون ٿا، اهي اسان کي پاڻ وڌيڪ
 ديهه جي ٻڌن ۾ ڦاسائين ٿا. جيڪڏهن اسان زمين ۾ بي
 مدائنتو ٻج ٻوڪيون، چاهي اسان ان زمين ۾ ڪيترو به هر
 هلايون ۽ ڪهڙو به ستر پاڻ وجهون ۽ پاڻي وغيره به وقت
 سر ڏيون ٿڏهن به اهو فصل ڪڏهن نه ٺهي سگهنداسين.
 اسانجي سموري محنت، ٻج ۽ خرچ اڃا به وڃن ٿا. اهڙيءَ
 طرح ڪلجڪ ۾ اچي جو مڪتي حاصل ڪرڻ جو اصلي ٻج
 آهي اهو شبد يا نام جي ڪمائي آهي، جنهنجي پوري پوري
 ڄاڻ صرف پوري ستگوروءَ کان ملي سگهي ٿي.
 سوامي جي مهاراج جن به لکن ٿا:—
 ”ڪلجڪ گرم ڌرم نهين ڪوئي. نام به اڌار نه هونئي“

آهي. گورو نانڪ صاحب فرمائين ٿا:

”بن نامي هور پوڄ نه هونئي پر ملي لڳائي.“

يعني ته دنيا فضول پرم ۾ پلجي هن چوراسيءَ جي
جبلخاني ۾ پيئي ٿي. ان نام کانسواءِ مڪتي حاصل ڪرڻ
جو ڪو رستو ئي ڪونهي. گورو صاحب اڳتي سمجهائين ٿا:
”نام و سار چلي ان مارگ، انت ڪال پڇتائي هو.“

يعني نام جي ڪمائي ڪرڻ جو رستو ڇڏي جيڪڏهن
اسين ڪنهن ٻئي رستي تي هلڻ جي ڪوشش ڪريون ٿا ته انت
ويلي پڇتائو پوندو ڇاڪاڻ ته پنهنجو قيمتي وقت اڃا
فضول ڳالهين ۾ وڃايو سين. وري اڳتي سمجهائين ٿا:
”بن نامي دريڙوئي ٺاهين ٿا ڄم ڪري خاري.“

يعني شبد يا نام جي ڪمائيءَ کانسواءِ مالڪ جي درگاه
۾ وڃڻ جي ڪڏهن به اجازت نٿي ملي. جمدوتن جي هٿان
خراب خوار ٿيڻو پوي ٿو. اها ئي ڳالهه سوامي جي مهاراج جن
فرمائين ٿا:

”گورو ڪهين ڪول ڪر پائي، لڳ شبد اناحد جائي،

بن شبد آڀاو نه دوڄا، ڪايا ڪا چٽي نه ڪوڄا.“

يعني شبد يا نام جي ڪمائيءَ کانسواءِ ٻيو ڪوبه آڀاءُ يا
طريقو ڪونهي جنهن سان اسين ديئه جي بندن کان چوٽڪارو
پائي سگهون. باقي جيڪي به سادن آهن جهڙوڪ ڇپ ٽپ،
پوڄا پاٽ، دان پڇ وغيره انهن سڀني جو ڦل اسان کي ضرور
ملندو آهي پر انهن جي ڦل وٺڻ لاءِ اسان کي وري به ديئه
جي بندن ۾ اچڻو پوي ٿو. راجا مهاراجا ٿي اينداسين، سيٺ
شاهوڪار بڻجي اينداسين، قومن، مذهبن ۽ ملڪن جي
حڪومت حاصل ڪري اينداسين. وڌ ۾ وڌ وٺڪيٽ ۽ سرڳ
ٿاين پهچي وينداسين. پر اهي به پوڳ جهڙيون آهن ۽ انهن

[illegible]

"Now ye are clean through the Word which I have spoken unto you." (John 15:3)

၁၉၄၆ ခု ဇူလိုင်လ ၁ ရက်နေ့

"အသံကဲ့သို့ အနုစွာ ဖြောင့်တန်းစေရန်"

[illegible]

"I say unto thee, except a man be born again he can not see the kingdom of God." (John 3:3)

[illegible]

— ကံကောင်းလို့ အကုန်လုံးပဲ ပေးတာပဲ။

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

“*وَلَا تَقْرَأُ الْكِتَابَ طَرَفًا*”

”مر جائون مانگون نهين، اپني تن کي ڪاڄ،
 پرمارت کي ڪارني، موهي نه آوي لاج.“
 يعني سنت مهاڻا اسانجا شيوا ۾ ڏنل پتسا پين جي
 پراپڪار ۾ لڳائي ڇڏيندا آهن ته جتن اسانجي ڪمائي سڦلي
 ٿئي. پر پنهنجي واسطي ڪڏهن به ڪنهنجي اڳيان هٿ نه
 ٿهلائيندا آهن. سوامي جي مهاراج جن به پنهنجي ٻائيءَ ۾
 اهوئي فرمائين ٿا:

”گورو نهين پرکا تيري ڌن ڪا، اُن پٽ ڌن هٿ پڳتي نام ڪا،
 پر ٿيرا اپڪار ڪراوين، پوکي، پياسي ڪر دلاوين.“
 مهاڻا روداس به سڄي عمر جتيون ٺاهي گذارو ڪيو
 حالانڪ ڪتري راجپوت راجا پيا سندن سيوک هروءَ ميواڙ
 جي راڻي ميران ٻائي به هننجي ششپ هئي. ميران ٻائيءَ جي
 زندگيءَ جو ورتاوت آهي ته هنکي برادريءَ وارن طعنو هنيو
 ته تون خود محلن ۾ راڻي بڻجي ويئي آهين پر تنهنجو گورو
 پيو جتيون ٺاهي گذارو ڪري. پريمي سيوک لاءِ پنهنجي
 سنگوروءَ جي باري ۾ طعنو ٻڌڻ ڏاڍو مشڪل ٿيندو آهي.
 تنهنڪري هيرءَ هڪڙو قيمتي هيرو کڻي روداس جن وٽ
 آئي ۽ عرض ڪيائين ته اي گرديو! لوڪ مونکي طعنا ٿا
 ڏين. اوهان مهر ٻائي ڪري هيءَ هيرو وڪڻي ڪا سني
 جاءِ ٺهرايو ۽ ان ۾ رهي عزت جي زندگي گذاريو. تنهن تي
 روداس مهاڻا سمجهائين ته ڏي! مونکي جو ڪجهه به مليو
 آهي اهو هنن جتين ٺاهڻ مان مليو آهي، هن ڪوندي جي
 ٻائيءَ مان مليو آهي. مهاڻا زندگيءَ ۾ مثال ٿي
 ڏيکاريندا آهن ته ڪهڙيءَ طرح دنيا ۾ رهندي، دنيا جو
 ڪم ڪار ڪندي به مالڪ جي پڳتي ڪرڻي آهي. مهاڻا
 ائين ڪونه ٿا چون ته گهر بار ڇڏي جهنگلن ۽ ٻهاڙن ۾ هليا
 وڃو ۽ تنهاس ڌارڻ ڪريو. اتي وڃي ڪو مالڪ جي ملڪ ۾

”سمرت نام ڪل وڪ سڀ ڪاٿي،

ڌرمراء ڪي ڪاغذ ڦاٽي.“

”ڌرمراء اب ڪيا ڪريگرو، جو ڦاٽو سگلو ليڪا.“

حضرت عيسيٰ به بائيبل ۾ چون ٿا:

“Blessed are they, that hear the Word of God and keep it.” (Luke 11:28)

.....
 “He that heareth my Word hath everlasting life and is passed from death unto life.” (John 5:24)

يعني نه اهي خوش قسمت آهن جي پنهنجي اندر ان شيد
 کي ٻڌن ٿا ۽ سنڀالي رکن ٿا.

فرمائين ٿا ته جنهنڪي مان ان شيد سان جوڙيان ٿو اهو
 مروت جي پنڇي کان ڇڻي هميشه لاءِ امر زندگي پائي ٿو.

اهڙا مهاتمائون دنيا ۾ اچن ٿا پر تمام ٿورا. هو سڄي ڀر يمين
 ۽ جڳياسن کي شيد يا نام جو رستو ڏيکارڻ لاءِ هر سمي دنيا
 ۾ ايندا رهندا پر ٿورا. گورو نازڪ صاحب لکن ٿا:

”جڳ جڳ سنت ڀلي پريپ ٿيري.“

ائين ناهي ته ڪو سڀا مهاتمائون ڪنهن خاص وقت تي
 اچن ٿا ۽ نه اهي ڪنهن خاص ملڪ يا خاص قوم جي ٻڌن
 ۾ هوندا آهن. هر هڪ جڳ ۾ مهاتمائون ٿيندا آيا آهن ۽ هو
 ڪنهن به قوم يا مذهب يا ملڪ ۾ اچي سگهن ٿا. گورو
 صاحب فرمائين ٿا:

”جڳ جڳ پيڙهي چلي ستگورو ڪي،

جني گورمک نام ڏيائيا،“

”هر جڳو جڳو جڳ جڳو جڳو،

سد پيڙهي گورو چلندي.“

:- १५ :-

“ငါ့မိခင်ရဲ့ ဘာသာရပ်နဲ့ မတူရင် အားမရှိဘူး”

— ၂၆ —

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ကျွန်ုပ်တို့၏ အသံကို ခံယူရန် နားထောင်ပါ။

၁၉၁၁ ခုနှစ် ဇူလိုင်လ ၁ ရက်နေ့

၁၆၆၆ ခုနှစ်၊ ဇန်နဝါရီလ ၁၀ ရက်နေ့၊ နေပြည်တော်၊ မြန်မာနိုင်ငံတော်

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

(Faint handwritten notes at the bottom of the page)

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

— १०० —

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

این جو سبزی و دوسه : کراچی ، لاہور ، پشاور ،

وہی ہے جس نے ان کو اپنا گھر بنا لیا ہے۔

[illegible][illegible][illegible]

ရင်းနှီးမြှုပ်နှံမှုများကို အားပေးခြင်းနှင့် ပတ်သက်၍ အောက်ပါအတိုင်း ဖော်ပြပါမည်။

[illegible]

دکتر محمد حسن یوسفی

၁၃၆၅-ခုနှစ် အောက်တွင် ဖော်ပြပါ အချက်များကို ဖော်ပြပါ။

1966, 1967, 1968, 1969, 1970, 1971, 1972, 1973, 1974, 1975, 1976, 1977, 1978, 1979, 1980, 1981, 1982, 1983, 1984, 1985, 1986, 1987, 1988, 1989, 1990, 1991, 1992, 1993, 1994, 1995, 1996, 1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 26

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

٩٧
 سڌو تعلق نٿو ٿي سگهي. هاڻي ته ڪو زندهه ديهه ڌاري
 ڳورو ملي ٿڏهن ئي اسان جو هن سان پيار ٿي سگهي ٿو ۽
 هنجو پيار ٿي اسان کي پرمانا جي پيار ۾ لڳائي سگهي ٿو.
 سچا ۽ پورا ڳورو ٻن قسمن جا ٿيندا آهن. هڪڙا ته اهي
 جي سڌا سچڪند ڪان ايندا آهن ۽ جنم کان ئي سنت هوندا
 آهن. ٻيا اهي جي شبد جي ڪمائي ڪري پنهنجي ڳورو
 جي ديا مهر سان سچڪند بڻجي وڃن ٿا ۽ پنهنجي زندگيءَ
 ۾ ئي سنت بڻجي وڃن ٿا. جڏهن اسان ڪنهن اهڙي مهاڻا
 جي شرن حاصل ڪريون ٿا ته هو اسان کي نام ڏيئي
 پيفڪر نه ٿو رهي پر اسان کي ڌر ڌام پهچائڻ جي ذميواري
 کڻي ٿو. ڳورو نانڪ صاحب فرمائين ٿا:—

”ڳورو ميري سنگه سدا هر نالي“

وري فرمائين ٿا:—

”ڳورو کي دات نه مڻي ڪوئي،

جس بخشي ٿس ٿاري سوئي“

حضرت عيسيٰ به فرمائي ٿو:—

“And I give unto them eternal life, and they shall
 never perish neither shall any man pluck them out
 of my hand.” (John 10:28)

يعني مان انهن کي امر ڏيڻ ٿو ۽ هو ڪڏهن به
 ناس نه ٿيندا ۽ هنن کي مون کان ڪو الڳ ڪري نه سگهندو.
 جن تي ستڱورو پنهنجي چاٻ لڳائڻو انهن کي پوءِ
 جمدوتن سان گڏ وڃڻو نه ٿو پوي. هن جي نام جي بخشش
 کي اسان کان ڪوبه ڪسي نه ٿو سگهي.

هڪ ٻئي هنڌ زوردار لفظن ۾ حضرت عيسيٰ چيو آهي:

“Heaven and earth shall pass away but my
 words shall not pass away.” (John 10:28)

7. 4. / 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 846. 847. 848. 849. 850. 851. 852. 853. 854. 855. 856. 857. 858. 859. 860. 861. 862. 863. 864. 865. 866. 867. 868. 869. 870. 871. 872. 873. 874. 875. 876. 877. 878. 879. 880. 881. 882. 883. 884. 885. 886. 887. 888. 889. 890. 891. 892. 893. 894. 895. 896. 897. 898. 899. 900. 901. 902. 903. 904. 905. 906. 907. 908. 909. 910. 911. 912. 913. 914. 915. 916. 917. 918. 919. 920. 921. 922. 923. 924. 925. 926. 927. 928. 929. 930. 931. 932. 933. 934. 935. 936. 937. 938. 939. 940. 941. 942. 943. 944. 945. 946. 947. 948. 949. 950. 951. 952. 953. 954. 955. 956. 957. 958. 959. 960. 961. 962. 963. 964. 965. 966. 967. 968. 969. 970. 971. 972. 973. 974. 975. 976. 977. 978. 979. 980. 981. 982. 983. 984. 985. 986. 987. 988. 989. 990. 991. 992. 993. 994. 995. 996. 997. 998. 999. 1000.

وري پنهنجي باري ۾ حضرت عيسيٰ بلڪل صاف
لفظن ۾ فرمائين ٿا:

"I must work the works of Him that sent me,
while it is day; the night cometh when no man can
work. As long as I am in the world I am the light of
the world."
(John 9:4:5)

يعني جنهن مون کي موڪليو آهي انهيءَ جو ڪم اسان کي
ڏينهن هوندي يعني پنهنجي زندگيءَ ۾ ڪرڻا جهڙا
ڇاڪاڻ ته اها رات اچڻ واري آهي جڏهن ڪچ به ڪم نه
ٿي سگهندو. جيستائين مان جهڳٽ ۾ آهيان تيستائين مان
جهڳٽ جي چوٽ آهيان.

گروءَ جي ضرورت صرف انڌائن آهي نه هر اسان جهڙو
انسان ٿي اسان کي سڀ ڪا ڳالهه چڱيءَ طرح سمجهائي
سگهي ٿو. جيڪڏهن موجوده گروءَ بنا پگتي ٿي سگهي
ها ته پوءِ وقت بوقت مهائما هن سنسار ۾ ڏيه ڌاري ڇو اچن ها؟
گذريل مهائما پنهنجو ڪم پورو ڪري واپس وڃي پر مهائما ۾
سمايا. هاڻي ته اسان کي زندهه مهائما جي ضرورت آهي جو
اسان جهڙو انسان ٿي اسان کي سمجهائي. دنيا جو ڪو به
ڪم استاد کان سواءِ نه ٿو سگهي سگهجي. توهين ڏسو ته
انجنييري ۽ ڊاڪٽريءَ تي تجربا ڪار ليڪن جي ڪتابن
سان لئبرريون ڀريون ٿيون آهن پر ڪو به شخص
اهڙو نه ملندو جو صرف اهي ڪتاب پڙهي ڪري ٿي
انجنيئر يا ڊاڪٽر بڻيو هجي. پندرهن ويهه سال استادان جي
صحت ۽ سنگت ڪري، محنت ڪري انهن جي واقفيت
ملي ٿي. اسان کي ننڍي هوندي کان ئي هر منزل تي هر
ڪنهن ڪم ۾ ڪنهن نه ڪنهن استاد يا رهبر جي ضرورت
پاڻ رهي آهي. روحانيت جو مسئلو ڏاڍو پيچيدو آهي.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

(John 5:35)

were willing for a season to rejoice in His light".

"He was a burning and shining light; and ye

John the Baptist.

၂၇။ ဤသို့ အစွဲအနာမရှိဘဲ ပျက်စီးခြင်း မရှိဘဲ

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840.

[illegible][illegible]

ਗਾਓ ਭਾਗੀ ਸ੍ਰੀ ਅੰਬੋ ॥ ਅੰਬੋ ॥ ਅੰਬੋ ॥ ਅੰਬੋ ॥ ਅੰਬੋ ॥

မင်းကြီး၏ ကျန်းမာရေးနှင့် ပတ်သက်၍ အောက်ပါအတိုင်း ဖော်ပြပါသည်။

မင်းလူဝံ့အောင်လုပ်ပါ။

မောင် နှင့် မိန်းမ နှစ်ယောက်လည်း နှစ်ယောက်လည်း

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

၁၄-၆၅ နှစ် ကိုယ်စားပြု အဖွဲ့ဝင်များ

అతనిని గొట్టే గొట్టే నాకు పట్టే పట్టే అట్టే అట్టే

[illegible]

၅။ ကြိတ် နှစ် ဂါး နှစ် နှစ် ၊ ကြိတ် နှစ် နှစ်

[illegible]

၂၇၄ ဘဏ္ဍာရေး ဝန်ကြီးရုံး၊ ရန်ကုန်၊ မြန်မာနိုင်ငံတော်

[illegible]

မန္တလေးတိုင်းဒေသကြီးရှိ မြို့များတွင် နေထိုင်သူများ၏ အသက်အရွယ်နှင့် လိင်အမျိုးအမည်အရ ဖွဲ့စည်းထားသော အုပ်စုများကို ဖော်ပြပါသည်။

"...
"

ਸ੍ਰੀ ਭਗਵੰਤ ਸਿੰਘ ਨਾਮਕ ਸਿੰਘਾਂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਵਿਚ ਸ਼ਾਮਲ ਹੋਏ।

منہ کی خدمت میں حاضر ہو کر اپنے

حقيقت ۾ ڳوروءَ جو اصلي روپ شبد ٿي آهي. ان شبد سر ۾ نه فقط دنيا جي جيون کي سمجهائڻ ۽ چٽائڻ لاءِ ٿي ڏارن کي واهي ۽ نڪي جي واهي روپ هيءُ شرير آهي. هي شرير نه ڳورو ۽ شش ٻنهي کي هٿ دنيا ۾ ئي ڇڏي ٿو. شش جو اصلي روپ آتما آهي جا آخر ۾ وڃي ان شبد ۾ ئي سمائي. ڳورو پنهنجو شرير ڇڏي کانپوءِ به شبد سڙو ۾ سان شش جي سنڀال ڪري ٿو. حضرت عيسيٰ جن بائيبل ۾ چوڻ ٿا:

"These things have I spoken unto you, being yet present with you. But the Comforter (Shabad) which is the Holy Ghost, whom the Father will send in my name, He shall teach you all things to your remembrance, whatsoever I have said unto you."

(John 14:25:26)

يعني مون هي ڳالهيون توهان سان ڪڍي نروان کي چيون آهن. پر سهايوڪ يعني پوتر آتما جنهن کي پتا منهنجي نالي سان موڪليندو آهي توهان کي سڀ ڳالهيون سيکاريندو ۽ جيڪي به مون اوهان کي ٻڌايو آهي اهو سڀ ڪجهه اوهان کي ياد ڪرائيندو.

ارڻات ڇڏهن مان هي شرير ڇڏي هليو ويندس ته اهو مالڪ منهنجي نوراني سڙو ۾ ان شبد کي اوهان جي اندر پرگهت ڪندو ۽ پوءِ نوراني سڙو ۾ توهان جي سنڀال ۾ رهڻائي ڪندو.

ڳورو سچ پچ نه شبد ٿي آهي. هو جيون لاءِ هن دنيا ۾ شرير ڌاري ان مالڪ تائين پهچائڻ جو ذريعو بڻجي ٿو. پوءِ پنهنجو ڪم پورو ڪري ان شبد ۾ ئي وڃي سمائي ٿو. اهڙيءَ طرح جيون جي آتما به ان شبد جو ئي حصو آهي ۽

جدا ٿيڻ جو ڪو سبب نه ٿو ڏئي.

”جدا ٿيڻ جو ڪو سبب نه ٿو ڏئي.“

جدا ٿيڻ جو ڪو سبب نه ٿو ڏئي :

جدا ٿيڻ جو ڪو سبب نه ٿو ڏئي.

جدا ٿيڻ جو ڪو سبب نه ٿو ڏئي (John 14:7:9)

”He that hath seen me hath seen the Father.“

جدا ٿيڻ جو ڪو سبب نه ٿو ڏئي.

جدا ٿيڻ جو ڪو سبب نه ٿو ڏئي.

جدا ٿيڻ جو ڪو سبب نه ٿو ڏئي.

جدا ٿيڻ جو ڪو سبب نه ٿو ڏئي.

جدا ٿيڻ جو ڪو سبب نه ٿو ڏئي.

جدا ٿيڻ جو ڪو سبب نه ٿو ڏئي.

جدا ٿيڻ جو ڪو سبب نه ٿو ڏئي.

جدا ٿيڻ جو ڪو سبب نه ٿو ڏئي.

جدا ٿيڻ جو ڪو سبب نه ٿو ڏئي.

جدا ٿيڻ جو ڪو سبب نه ٿو ڏئي.

جدا ٿيڻ جو ڪو سبب نه ٿو ڏئي.

جدا ٿيڻ جو ڪو سبب نه ٿو ڏئي.

جدا ٿيڻ جو ڪو سبب نه ٿو ڏئي.

جدا ٿيڻ جو ڪو سبب نه ٿو ڏئي.

جدا ٿيڻ جو ڪو سبب نه ٿو ڏئي.

جدا ٿيڻ جو ڪو سبب نه ٿو ڏئي.

جدا ٿيڻ جو ڪو سبب نه ٿو ڏئي.

جدا ٿيڻ جو ڪو سبب نه ٿو ڏئي.

جدا ٿيڻ جو ڪو سبب نه ٿو ڏئي.

جدا ٿيڻ جو ڪو سبب نه ٿو ڏئي.

آئند صاحب پر به هر روز پڙهندا آهيزن:

”واڃي پنج شبد بست گهر سپاڳي،
گهر سپاڳي شبد واڃي، ڪلا ڄت گهر ڌار يا،
پنج دوت ٿڌوس ڪيتي، ڪال ڪنٽڪ مار يا.“
ڪبير صاحب به فرمائين ٿا:

”پنجي شبد اناحد واڃي، سنگي سارنگ پاني،
ڪبير داس تيري آرتي ڪيني، نرڪار نر باني.“
ڀڳت ڀيني به گرنٽ صاحب پر فرمائين ٿا:
”پنج شبد نرمائل باڃي، ڍلڪي چنور سنڪ گهن ڳاڃي،
دل مل دئيو گورمڪ گيان، ڀيني جاڇي تيرا نام.“
سچو گورو

سچو ۽ پورو گورو اهوئي آهي جو انهن پنجن شبدن ذريعي
اسانکي پنهنجي سڃي گهر وٺي وڃي. سوامي جي مهاراج
به اهائي ڳالهه پنهنجي ٻائيءَ پر لکن ٿا ته شبد سروي، شبد
اڀياسي گوروءَ جي ئي تلاش ڪرڻ گهرجي، فرمائين ٿا:
”گورو سوئي جو شبد سنهيهي، شبد بنا دوسر نهنين سڃي،
شبد ڪماوي سو گورو پورا، ان چرنن کي هو ڇا ڌوڙا،
اور پهچان ڪرو مت ڪوئي، لڪش لڪش نه ڏيکو سوئي،
شبد پيد لي ڪر تم ان سي، شبد ڪماوو تم تن من سي.
حضرت عيسيٰ به ائين ئي فرمائين ٿا:

“If the blind leads the blind, both shall fall into
the ditch.
(Matthew 15: 14)

يعني جي مهاڻا پورو نه هوندو ته اهو پنهنجي شش
ميت ٻڏي ويندو. گور نانڪ صاحب به اهوئي سمجهائين ٿا:
”ستگرو پورا شبد سنائي، ان دن ڀڳت ڪرو ٿو لائي.“

شمس تيريز جن به چون ٿا:

”آن بادشاه اعظم در بسته بود محکم،
پوشیده دلتي آدم يعني ڪ پر در آمد.“

اصلي گورو اسانڪي باهرين رسمن ۽ رواجن ۾ نه ٿو ڦاسائي
بلڪ شبد جي ڪمائي ڪرڻ جو طريقو ٻڌائي ٿو. پرور گورو
اسانڪي اسان جي شرير اندر ٿي اصلي گهر وڃڻ جو رستو
ڏيکاري ٿو. گورو نانڪ جن سمجھائين ٿا:

”گهر ۾ گهر دکلاءِ دي، سرستگورو پرڪ سڄان،
پنج شبد ڌنڪار ڌن، ٿه باجي شبد نشان.“

اھوئي سوامي جي مهاراجن جو تجربو آھي. فرمائين ٿا:

”گهر ۾ گهر گورو دکلاوين،
ڌن شبد پانچ بتلاوين.“

مهاٿما سمجھائين ٿا ته اسانجي نج گهر يعني سڄڪنڊ پھچڻ
تائين اسانجي اندر پنج منزلون آهن. حضرت عيسيٰ به
اھوئي اشارو ڏنو آھي جڏھن فرمائين ٿا:

“In my Father's house are many mansions.”
(John 14 : 2)

يعني منهنجي پٽا جي گهر ۾ گھڻي رھڻ جا اسٿان آهن.
ھرھڪ منزل کي پنھنجو پنھنجو شبد آھي. سڄو
گورو اسانجي خيال کي انھن پنجن منزلن مان وٺي انھن پنجن
شبدن يا ڌنين سان جوڙي اسانڪي پرماٿا تائين پھچائي ٿو.
اصل ۾ شبد نه هڪ ئي آهي ليڪن هرڪنهن منزل تي ان
جو آواز جدا جدا آهي ۽ الڳ الڳ پرڪاش آهي. مثال طور
ڪا ندي جبلن مان نڪري ٿي ۽ سمند ۾ وڃي سائجي
ٿي. پر ان نديءَ جي وهڪري جو آواز مختلف هنڌن تي
الڳ الڳ آهي. جڏهن جبلن مان نڪري ٿي اتي هڪ قسم
جو آواز آهي ته وري جڏهن ڪڏن ۽ ڏڏن تان لنگهي ٿي ته

يعني نه برهم جي ڄاڻ وارو برهم ٿي ٿي ويندو آهي.
 جهڙي طرح سمنڊ جون لهرون اٿن ٿيون ۽ پوءِ سمنڊ ۾ ٿي
 وڃي سمائجن ٿيون، اهڙي طرح جهڙو لاڳاپو هڪ لهر جو
 سمنڊ سان آهي تهڙو ئي رشتو مالڪ جي ڀڳتن جو مالڪ سان
 هوندو آهي. هر هڪ مهاڻا ان ستنام سمنڊ جي لهر هوندو
 آهي جو دنيا ۾ اچي اسانجي خيال کي ان شيد يا نام سان
 جهڙي بلڪ اسانکي سان وٺي وڃي ان ستنام جي سمنڊ ۾
 سمائبو آهي. يا اڃا به چئجي ته اهو پرمانا ڇڏهن اسانکي
 ڏيهه جي پنڌن کان ڇڏائڻ چاهيندو آهي ته اهو خود گرومڪ
 جي اندر ويهي اسانجي خيال کي شيد سان ڳنڍي اسانکي
 واپس وٺي وڃي پاڻ ۾ ٿي ملائي ڇڏيندو آهي.
 گورو نانڪ صاحب فرمائين ٿا:

”ستگورو وچ آب رکيون، ڪر پرگهت آڪ سنڀا.“

يعني گورو ۽ پرمانا هڪ ٿي آهي. ٻنهي ۾ صرف اهوئي
 تفاوت آهي ته پرمانا گورو ۽ جو ٿي اصلي سروب آهي ۽
 گورو انساني قالب (ڏيهه) ۾ رب آهي. جيستائين پرمانا
 اسانجي انساني جامي جي سطح (Level) تي گورو جي روپ
 ۾ نٿو اچي تيستائين اهو اسان سان پنهنجو تعلق پيدا نه ٿو
 ڪري سگهي. اهو پرمانا گورو اندر ويهي پاڻ ڳالهائي ٿو:
 ”هن ڪايا برهم ڪٿي آهي،

برهم ٻولي ڪايا ڪي آهي.“

گورو نانڪ صاحب سمجهائين ٿا:

”گورو ۾ آب رکيا ڪر ٿاري.“

وري ٻئي هنڌ لکن ٿا:

”سمنڊ وروڻ شرير هر ڏيکيا اڪ وست انوپ ڏکائي،

گورو گوڀند، گوڀند گورو هت، نانڪ پيد نه ڀائي.“

گورو صاحب سمجهائين ٿا ته اسان شرير اندر شيد جي

اهوئي سوامي جي مهاراج جن اڀديش ڪن ٿا:
 ”ميتر ٿيرا ڪوئي ٺهين سڱين ۾،
 پڙا ڪيون سروي ان لڱين ۾،
 چيت ڪر پرڀت ڪرو ست سڱ ۾،
 ڪرو ڦر رنگ ڊي نام ارنگ ۾.“
 هڪ ٻئي هنڌ به سمجهائين ٿا:

”اٽڪ ٽون ڪيون رها جڳ ۾ پٽيڪ ۾ ڪيا ملي پائي،
 ڪٽڪ ٽون ڌار اب من ۾ ڪڙج ست سڱ ۾ جاني.“
 وري مولانا صاحب به پنهنجي ڪلام ۾ فرمائين ٿا:
 ”هم نشيني ساعتی با اولیا، بهتر از صد ساله طاعت نی ریا.“
 يعني فرمائين ٿا ته مالڪ جي پڳڻن ۽ پيارن جي هڪ
 گهڙيءَ جي به سڱت ۽ صحبت من ۽ ٻڌيءَ موجب ڪيل
 سو سالن جي بندگيءَ کان بهتر آهي ڇاڪاڻ ته جي رستو
 آهي اوڀر طرف ۽ اسين ڊوڙون اولهه طرف نه اسين پنهنجي
 منزل مقصد کان پٺاڻ وڌيڪ دور ٿيندا وينداسين. هر هڪ
 مهاڻا اسانجي اندر ست سڱ ذريعي ئي مالڪ سان ملڻ جو
 شوق ۽ پيار پيدا ڪري ٿو.

سنتن جو اصلي سروب

سنتن جو اصلي سروب شيد يا نام ئي هوندو آهي. مهاڻا
 ان شيد يا نام منجهان ئي ايندا آهن ۽ اسان جي خيال کي
 ان شيد يا نام سان ملائي، ان نام اندر ئي واپس وڃي سماجن
 ٿا. ڇاڪاڻ ته انسان جو استاد انسان ئي ٿي سگهي ٿو. ڊيو
 ديوتا نه ڪنهن ڏا ڪونه آهن ۽ پر ماڻها جي سروب جو ڪنهن
 پٿر ئي ڪونه آهي، تنهنڪري جيستائين اسان کي ڪو اسان
 جهڙو انسان ٿي نه سمجهائي ٿيستائين ان مالڪ بابت اسان کي
 ڪا به پوڄهه نه پئجي سگهندي. تنهنڪري حضرت عيسيٰ

يعني منمڪ شخص سدائين بکيا آهن. پرمالما انهن کي چاهي ڪيترو به ڏئي. انهن کي چاهي نيڪ اولاد هجي، ڏن دولت هجي، دنيا ۾ مان شان ۽ عزت هجي ۽ صحت به سٺي هجي نه به اهي ڪڏهن به پرمالما کان پرمالما نه گهرندا. اهي هميشه پرمالما کان پنهنجون دنيوي خواهشون ۽ ترشنائون پوريون ڪرائڻ چاهين ٿا. جي شخص جو هميشه دنيا جي پدارتن ۽ شڪلين پٺيان ئي ڦرندا رهن ٿا، گورو صاحب فرمائين ٿا ته اهڙن ماڻهن جو ڪڏهن پلجي به سنگ نه ڪرڻ گهرجي. بلڪ لڪ ڪوهه دور رهڻ گهرجي. هاڻي سوال اٿي ته پوءِ ڇا ڪنهن جي سنگت ڪرڻ گهرجي؟ پاڻيهي گورو صاحب ٻئي هنڌ فرمائين ٿا:

”گوبند جيئو ست سنگت ميل هر ڏيائيتي.“

يعني اي پرمالما! ساڌن، سنن ۽ مهاتمان جي سنگت ڏي نه جيئن تنهنجو پتو لڳي ۽ تنهنجي طرف اسانجو خيال وڃي. مهاتما سدائين ستسنگ تي زور ڏين ٿا ڇاڪاڻ ته گور مڪن جي ستسنگ ۾ وڃي ئي پتو پوندو آهي ته آتما ۽ پرمالما جو ناتو ڪهڙو آهي، آتما ۽ پرمالما جي وچ ۾ رڪاوٽ ڪهڙي ۽ ڇيڙ جي آهي ۽ اهي رڪاوٽون اسانجي اندر مان ڪيئن دور ٿي سگهنديون. مهاتما ستسنگ ان کي نه ٿا ڪولين جتي هڪ قوم ٻيءَ قوم جي ڳلا يا چغلي ڪندي هجي يا جنهن جاءِ تي هڪ مذهب ٻئي مذهب جي گلي ڪاٽڻ جون تدبيرون سوچيندو هجي يا جنهن هنڌ گذريل راجائن ۽ مهاراجائن جون پراڻيون ڪٿائون ۽ آکاڻيون ٻڌايون وينديون هجن. مهاتمان جي ستسنگ ۾ ڪنهنجي به ننڍا يا چغلي نه ڪئي ويندي آهي. اهي صرف اسان ۾ مالڪ جي ملڻ جو شوق ۽ پيار پيدا ڪندا آهن. ۽ اسانکي مالڪ سان ملڻ جو

مهائنا چونداسن جن فرمائين ٿا:

”دؤد مد جيون گهيه هه.“

گورو نانڪ صاحب به اپدش ڪن ٿا:

”جيون ڪاست مه هه بهشت، ست سنجمر ڪاپ ڪڍي جي،
رام نام هه جوت سبائي، لت گرومت ڪاپ ليجي.“
يعني جهڙيءَ طرح لڪڙيءَ اندر ٻاهه آهي پر اسان کي
نظر ڪونه ٿي اچي ۽ نه اسان ان مان ڪو فائدو وٺي سگهون
ٿا. جنهن وقت لڪڙيءَ تي لڪڙي ڊڙڙون ٿا ته ان جهڙيءَ
ذريعي ٻاهه پيدا به ڪريون ٿا ۽ ان مان فائدو به وٺون ٿا.
اهڙيءَ طرح اها رام نام جي جوت اسان سڀني جي اندر آهي
پر گرومڪن جي اپدش تي عمل ڪرڻ سان ئي ان جوت کي
پاڻي سگهون ٿا. گورو نانڪ صاحب تمام سندر مثال ڏيئي
سمجھائين ٿا:

”گهر زن لال بهو مالڪ لادي،

من ٻرميا له نه سڪائيئي،

جيون اوڏا ڪڍ گهچ ڪن ڪاڍي،

لتن ستگورو وست لهائيئي.“

يعني اسان جي گهر اندر يعني شراب به پرمائما بيشمار نام
روپي دولت رکي آهي پر اسان جو من ٻاهر مڪي ٿي ٻڙمن
پر منجهيو پيو آهي. جيستائين شراب به اندر وڃي ڪوچ نه ڪبي
تيسين اها دولت حاصل نه ڪري سگهبي. هاڻي مثال ڏين
ٿا ته ڪيترا دفعا پراڻين آبادين هيٺان لهيل ٺڪيل ڪوه مٽيءَ
سان ڊڄي ويندا آهن. اسان انهن زمين تي هلندا چلندا
آهيون پر اسانکي خبر ڪونه هوندي آهي ته ڪو ان هنڌ مٽيءَ
هيٺان ڪوه ڊپل آهي. پر اوڏ (Water-Diviners) پنهنجي
علم ذريعي اسانکي ٻڌائيندا آهن ته فلاڻي هنڌ ڪو ٺاڻي ڪرار
ته اوهانکي مٽيءَ هيٺان لهيل ٺڪيل ڪوه ملي ويندو. اوڏ

၁. မိမိတို့၏ ဂုဏ်သိက္ခာကို ထိခိုက်စေရန် ကြိုးပမ်းကြသည်။

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840.

မိုး၊ ဂျော့၊ ဂျက်၊ ဟိုက်၊ ဟိုက်၊ ဟိုက်၊ ဟိုက်၊ ဟိုက်။

ရက်စွဲနှင့် နေ့စွဲ ဖော်ပြပါ

“କିନ୍ତୁ ନାହିଁ ଏ ପ୍ରକାର”

၂။ ကျွန်ုပ်တို့၏ အကျိုးအမြတ်များကို အကျိုးအမြတ်များကို

“သိကတရား၊ နှစ်ခြင်းစေတီ၊ အာဇာနည်”

၇။ နိဂုံး

ڏاڏن کونن ڀاڳن وارا آهن. اهي هميشه ڪال جي چنبي ۾ رهن ٿا. انهنڪي ٻار ٻار جنم ۽ مرڻ جي دڪن ۾ اچڻو پوي ٿو. ايتري قدر جو آخر هنن کي وڃي گندگيءَ جي ڪپڙي جي جوڙ ۾ دڪ پوڳڻو پوي ٿو. جي پوري ستگروءَ جي ڪوچ نه ٿا ڪن يا ان کي تلاش ڪرڻ جي ڪوشش ئي ڪونه ٿا ڪن. اهي شبد يا نام سان ڪڏهن به ڇڙي نه سگهندا. پنهنجي ڪرمن انوسار چوراسيءَ جي جيلخالي ۾ دڪ ۽ مصيبتون پوڳيندا رهن ٿا. سچ پچ ته اهي دنيا ۾ اچي به جيئن ڪونه ٿا پر مثل ئي رهن ٿا. دنيا ۾ جيئندي به مٿن سمان آهن. گورو نانڪ صاحب جن فرمائين ٿا:

”ستگورو کي سڀو نه ڪينيا هر نام نه لڳو پيار،

ميت ترم جانو او جيوندي او آپ ماري ڪر نار.“

يعني هر هڪ شخص خوشي ۽ شانتِيءَ جي تلاش ڪرڻ چاهي ٿو ۽ جدا جدا پدارتن ۾ جدا جدا هنڌن تي وڃي ڳولهي ٿو. پر اصلي خوشي رڳو شبد ۾ ئي آهي جنهن سان اسانجو خيال صرف ستگروءَ جي ذريعي ئي ڇڙي سگهي ٿو. جي اسان کي ڪنهن ساڌو مهاڻا جي صحبت نه ملي ته چاهي اهو شبد يا نام اسان جي اندر آهي ته به اسان ان اوچي، سڄي ۽ پورن ڌن کي ڪڏهن به پڪڙي نه سگهنداسين. تنهن ڪري اسان کي گهرجي ته ڪنهن پوري گورمڪ جي تلاش ڪريون جو اسان جي خيال کي ان شبد سان جوڙي مالڪ سان ميلاب ڪرائي. ٻي ڪا به دنيا جي ڇيڙ اسانکي سڄي ۽ اصلي خوشي نه ڏيئي سگهندي. ٽين پاتشاهي گورو امر داس صاحب جن لکن ٿا:

”جي لڪ استريان پوڳ ڪري ٿو ڪندراج ڪمائي،

بنا ستگورو سک نه پائيتي ڦر ڦر جهوني ٻائي.“

היה ידוע כי יצאנו מן המצרים
ביום הזה ונאמר לנו

אל תאמר בלבבך כי יצאנו מן המצרים
ביום הזה ונאמר לנו

אל תאמר בלבבך כי יצאנו מן המצרים
ביום הזה ונאמר לנו

אל תאמר בלבבך כי יצאנו מן המצרים
ביום הזה ונאמר לנו

אל תאמר בלבבך כי יצאנו מן המצרים
ביום הזה ונאמר לנו

אל תאמר בלבבך כי יצאנו מן המצרים
ביום הזה ונאמר לנו

אל תאמר בלבבך כי יצאנו מן המצרים
ביום הזה ונאמר לנו

אל תאמר בלבבך כי יצאנו מן המצרים
ביום הזה ונאמר לנו

אל תאמר בלבבך כי יצאנו מן המצרים
ביום הזה ונאמר לנו

אל תאמר בלבבך כי יצאנו מן המצרים
ביום הזה ונאמר לנו

אל תאמר בלבבך כי יצאנו מן המצרים
ביום הזה ונאמר לנו

אל תאמר בלבבך כי יצאנו מן המצרים
ביום הזה ונאמר לנו

אל תאמר בלבבך כי יצאנו מן המצרים
ביום הזה ונאמר לנו

אל תאמר בלבבך כי יצאנו מן המצרים
ביום הזה ונאמר לנו

اڳتي وري فرمائين ٿا :

"I am the way, the truth, and the life; no man cometh unto the Father, but by me. If ye had known me, ye should have known my Father also; and from hence forth ye know Him and have seen Him.

(John 14:6, 7)

يعني مارگ، جيون ۽ سچائيءَ مان ئي آهيان. منهنجي سھائتا کان سواءِ ڪوئي به ٻيا وٽ نه پهچي سگهي ٿو. جي توهين مون کي سچاڻندا ته منهنجي پتا کي به سچاڻندا ۽ هاڻي هنن کي ڄاڻو ٿا ۽ هن کي ڏٺو به اٿو. يعني توهين پنهنجي پتا کي ضرب منهنجي ذريعي ئي ملي سگهو ٿا. مان هن سان ملائڻ جو ذريعو ۽ رستو آهيان. جيڪڏهن توهان مون کي سچاڻو ته توهان ان پرماتما کي سچاڻو ۽ ڏٺو.

وري اڳتي فرمائين ٿا :

"And he that seeth me seeth Him that sent me."

(John 12:45)

يعني جو مون کي ڏسي ٿو اهو منهنجي موڪلڻ واري کي ڏسي ٿو. يعني مون ان پرماتما کي ڏٺو آهي ۽ توهان مون کي ڏٺو آهي. انڪري اوهان به ان پرماتما کي ڏٺو آهي.

وري اڳتي پئي هنڌ چون ٿا :

"I am the light of the world; he that followeth me shall not work in darkness, but shall have the light of life."

(John 8:12)

يعني جڳت جي جوڻ مان آهيان. جيڪو منهنجي پٺيان هلندو سو اندڪار نه هلندو، پر جيون جي جوڻ پاڻي وٺندو. نلسي صاحب به اهوئي اُپديش ڪن ٿا :

"نلسي يا سنسار ۾ پانچ رتن هجن سار

ساڌ سنگ ستگورو شرن دين ديا آپڪار."

سڀني جي شَرير ۽ ديهه اندر آهي ۽ اسان جي واسطي ئي
پرماتما اسانجي اندر رکيو آهي. ليڪن کوج ڪهڙيءَ طرح
ڪرڻي آهي، ان جو پيد يا طريقو اسانکي گورمڪن وٽان ئي
ملي ٿو.

سنتن جي سنگت

گورو نانڪ صاحب اسانکي سمجهائين ٿا:
”انهن ٻاڻي پوئجي، سنتن هٿ ڏاڪي ڪنجي.“
وري ٻئي هنڌ گورو صاحب لکن ٿا:
”جس ڪا گريه تن ڏيا ٿا، ڪنجي گور سونپائي،
انڪ اُٻاو ڪري ٺهي پاوي، بن ستگور سرنائي.“
يعني پرماتما اسانکي ٻڌا ڪري اُن نام جي دولت
اسانجي اندر اسان واسطي رکي آهي پر اُن جو پيد گورمڪن
جي حوالي ڪري ڇڏيو آهي. تنهنڪري اسانکي اها چيز
حاصل ڪرڻ لاءِ ساڌن، سنتن ۽ مهاتمان جي سنگت ۽ صحبت
ڪرڻي پوندي آهي. گورو امر داس صاحب لکن ٿا:
”بن گور دالي ڪوئي نه پائي،

لک ڪوئي جي ڪرم ڪمائي.“
پنجين پاتشاهي گورو ارڄن ديو به لکن ٿا:
”ڪه نانڪ پريو اهر جنائي،

بن گورو مڪت نه پائِيئي پائي.“
گورو نانڪ صاحب ڪنهن ٻئي هنڌ فرمائين ٿا:
”ستگورو سيوي سدا سک پائي،
ستگورو الڪ ڏيا لڪائي.“

دي فرمائين ٿا:

”مست ڪوئي ڀرم ڀلي سنسار،
گور بن ڪوئي نه اترس پار.“

၁။ ဘုရားရှင်၏ နာမည်ကို ခေါ်ဝေါ်ခြင်း။
 ၂။ ဘုရားရှင်၏ နာမည်ကို ခေါ်ဝေါ်ခြင်း။
 ၃။ ဘုရားရှင်၏ နာမည်ကို ခေါ်ဝေါ်ခြင်း။
 ၄။ ဘုရားရှင်၏ နာမည်ကို ခေါ်ဝေါ်ခြင်း။
 ၅။ ဘုရားရှင်၏ နာမည်ကို ခေါ်ဝေါ်ခြင်း။
 ၆။ ဘုရားရှင်၏ နာမည်ကို ခေါ်ဝေါ်ခြင်း။
 ၇။ ဘုရားရှင်၏ နာမည်ကို ခေါ်ဝေါ်ခြင်း။
 ၈။ ဘုရားရှင်၏ နာမည်ကို ခေါ်ဝေါ်ခြင်း။
 ၉။ ဘုရားရှင်၏ နာမည်ကို ခေါ်ဝေါ်ခြင်း။
 ၁၀။ ဘုရားရှင်၏ နာမည်ကို ခေါ်ဝေါ်ခြင်း။

(Matthew 2: 25)

"It hark thee, O Father, Lord of heaven and earth, because thou hast hid these things from the wise and prudent, and hast revealed them unto babies."

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ अथ चत्वारिंशोऽध्यायः ॥
 “अथ चत्वारिंशोऽध्यायः” इति श्रुत्वा
 चत्वारिंशोऽध्यायः ॥

۷۲
اسانجي خيال کي انهن ڀرمن مان ڪڍڻ جي ڪوشش ڪري
ٿو. سوامي جي مهاراج جن فرمائين ٿا :

”ويد شاستر سرت اور پرانا پڙه پڙه سب پنڊت هارل
بنا سنگورو اور بنا شبد سرت ڪوئي نه اُٿري پر پارا.“
اهڙيءَ طرح گورو نانڪ صاحب به اُپديش ڪن ٿا :

”پڙهيئي جيتي برس برس پڙهيئي جيتي ماس :

پڙهيئي جيتي آرجا پڙهيئي جيتي ساس :

نانڪ ليکي لک گل هور هومي جهڪن جهاک.“

يعني ته جي اسين سچو ڏينهن پڙهندا رهون، سچو مهينو
۽ سچو سال پڙهندا رهون بلڪ ساري زندگي ۽ سواس سواس
پر پڙهندا رهون ته به اسانجي حساب ۾ صرف هڪ ئي ڳالهه
ڳڻي ويندي ته اسانجي سرت انهيءَ شبد يا نام کي پڪڙي
ٿي يا نه؟ جي نه ته اسانجو سچو پڙهڻ ۽ پڙهائڻ فضول آهي.
اهوئي ٿلسي صاحب پنهنجي ٻاڻيءَ ۾ لکن ٿا :

”چار اٺارن نه پڙهي ڪت پڙه ڪريا مول،

سرت شبد چينهني بنا جئون پنڇي چندول.“

يعني جيڪڏهن ڪوئي چار ويد، ارڙهن ڀران، نو وياڪرڻ
۽ ڇهه شاستر به پڙهي پر سرت جو ڳيان پراپت نه ٿيس ته ان
جي حالت چندول پڪيءَ جهڙي آهي. چندول هڪ پڪي
آهي جنهن کي ڪستورو ۽ اکڻ به چوندا آهن. هو هر هڪ
جانور جو نقل ڪندو آهي. جي ڪاٺو جي ٻولي ٻڌي ته ڪاٺو
وانگر ڪان ڪان ڪندو آهي يا ٻئي ڪنهن جانور جو آواز
ٻڌي ته ان وانگر ئي ٻوليندو آهي.

هڪ ٻئي هنڌ به ٿلسي صاحب لکن ٿا :

”پڙه پڙه ڪي سڀ جڳهه موٽا پنڊت پڇيا نه ڪوءِ،

ڍاڻي اڪثر پريم ڪي، پڙهي سو پنڊت هوءِ.“

”شبد ڪي سزاد جاني تان آپ پچاني“

يعني نه شبد ۽ نام جي لطف حاصل ڪرڻ سان ئي اسين پنهنجو پاڻ سڃاڻڻ جي قابل بڻجنون ٿا. اسين ان وقت پنهنجو پاڻ سڃاڻون ٿا جڏهن اسانجي آتما جي مٿان چڙهيل سڀ گندا گندا پردا لهي وڃن ٿا. انهيءَ ڪري مهاتما اسانڪي مڪتي حاصل ڪرڻ جو اهوئي طريقو سمجهائين ٿا ته اسين پنهنجي خيال کي اندر شبد يا نام سان جوڙيون. گرو صاحب هڪ ٻئي هنڌ به فرمائين ٿا :-

”شبد مري سو مري رهي، ڦر مري نه دوجي وار.“

سرامي جي مهاراج جن اڀديش ڪن ٿا :-

”نام ڪي رنگ ۾ رنگ جا، ملي توه ڌام نچ اپنا.“

يعني ڳرڻن، پوئين، ويدن ۽ شاسترن ۾ مهاتما ان نام يا شبد جي مهما لکن ٿا. انهن کي پڙهڻ سان اسانڪي سوچهي پري ٿي نه اسانڪي نام جي ڪمائي جو ڪرڻي آهي ۽ ڪهڙيءَ طرح نام جي ڪمائي ڪرڻي آهي. ڳرڻن ۽ پوئين ۾ اهو نام ڪونهي پر صرف نام حاصل ڪرڻ جو طريقو آهي. انهن جي پڙهڻ ۾ مڪتي نه آهي. جيڪي پڙهون ان ئي عمل ڪرڻ ۾ مڪتي آهي. جهڙيءَ طرح ڊاڪٽري ڪتابن ۾ نسخا يا بيمارين جي علاج ڪرڻ جو طريقو لکيل هوندو آهي پر ڪتابن ۾ دوائون ڪونه هونديون آهن. جيڪڏهن ڪو بيمار سچو ڏينهن اهڙا ڪتاب رڳو پڙهي نه هنجو بيماريءَ مان چوٽڪارو نه ٿيندو. دوا الڳ ڇيڙ آهي ۽ انجو ذڪر ڪا بي ڳالهه. اهڙيءَ طرح جيڪڏهن ڪو سچو ڏينهن ڪاڏي تيار ڪرڻ جا ڪتاب پڙهندو رهي جنهن ۾ قسمين قسمين ڪاڏن تيار ڪرڻ جا طريقا لکيل هجن ته ڪهڙو طعام ڪهڙيءَ

هوندو ۾ هر هڪ ڌارمڪ جڳهه تي هي جوت چو جلائي ويندي آهي ۽ گهند چو وڃايا ويندا آهن. در اصل، رشين مين، سنتن مهاڻائن ۽ ٻين پيغمبرن سمجهايو ته اسانجو شرير ئي سڀ کان وڏو ۽ اصلي گور دوارو، مندر، مسجد يا ديول آهي ۽ هر ڪنهن جي شرير اندر جوت جلي رهي آهي ۽ شيد جو آواز جو شروع ۾ سنڪ يا گهند جهڙو آهي، سو وڃي رهيو آهي. پر اسين دنيا جا چيو اهڙن مالڪ جي پگتن ۽ پيارن جي وچ ۾ ڪاٺوءَ انهن جي اصلي اعلير کي پلجي وياسين ۽ ٻاهر مڪي ٿي پياسين. ان اندر جي شيد جي آواز کي ٻڌي ۽ اندرين جوت ڏسي اسانجو من قابو ۾ اچي وڃي ٿو ۽ وس ٿي پوي ٿو ۽ واپس پنهنجي ٺڪاڻي تي پهچي وڃي ٿو. روح ۽ من جي ڳنڍ کلي پوي ٿي. گورو امر داس صاحب سمجهائين ٿا :

”گورو گيان انجن سچ نيتري پائيا،
انتر چائن اڳيان انڌر گنوايا،

جوتي جوت ملي من مانيا، هر در سويا پاوڻيا.“
جڏهن اسين گورمڪن جي گيان ۽ تجربي موجب اکين ۾ شيد روپي سرمو پاڻون ٿا ته اڳيان ٿا جو انڌرو اسانجي رستي ٿان هڻي وڃي ٿو. پر مائتا جو نور ۽ پر ڪاش نظر اچڻ شروع ٿي وڃي ٿو. هندستان ۾ اهو عام رواج آهي ته جيڪڏهن ڪنهن جي اکين جي نظر گهٽجي ويندي آهي ته هنکي سرمي پاڻن جي هدايت ڪئي ويندي آهي. اسانجو اهو خيال آهي، ته سرمي پاڻن سان نظر ٺيڪ ٿي ويندي آهي ۽ سڀ ڪجهه چڱيءَ طرح ڏسي سگهيو آهي. تنهنڪري گورو امر داس صاحب اهو مثال ڏئي سمجهائين ٿا ته اسين دنيا جا چيو اکين هوندي انڌا ٿي وينا آهيون. اسانکي پنهنجي اندر ۾

v₂

ان جي شڪل اُپتي ڪوهه مثل آهي. پلٽو صاحب فرمائين ٿا ته جڏهن اسين نون دوارن مان خيال ڪڍي اکين پٺيان ايڪاگر ڪنداسين ته اسين ان اُپتي ڪوهه ۾ اچي وينداسين ۽ ان هنڌ هر ڪنهن جي اندر هڪ جوت پري رهي آهي. ان جوت جي پرت لاءِ نه ڪنهن وٽ جي ضرورت آهي ۽ نه تيل جي. ٻاهر اسين ڪا به جوت جلايون ته ان لاءِ وٽ ۽ تيل جي ضرورت پوندي آهي. جيڪڏهن وٽ خلاص ٿئي يا تيل خلاص ٿئي ته جوت وسامي وڃي ٿي. پر جنهن جوت جو پلٽو صاحب ذڪر ڪن ٿا اها جوت چوويهه ٿي ڪلاڪ اسان سڀني جي اندر پري رهي آهي. سال ۾ ڇهه مندون، ۱۲ مهينا ۽ ڏينهن ۽ راتيون ٿينديون آهن. هيءَ جوت هر انسان اندر هر وقت جاي رهي آهي. اها ئي ڳالهه سوامي مهاراج جن فرمائين ٿا:

”سو تم آءِ نڪتن ۾، سميت ڪر ايڪ بهان هونا،

دوئي بهان دور هو جائي، درشتي جوت ۾ ڌرنا.“

يعني جنهن وقت اسين پنهنجو خيال نون دوارن مان ڪڍي اکين پٺيان ايڪاگر ڪريون ٿا ته اسين دويت مان ايڪتا ۾ اچي وڃون ٿا. جيستائين اسانجو خيال ٻنهي اکين جي ذريعي ٻاهر آهي تيستائين اسين دويت ۾ ڦاٿل آهيون پر جنهن وقت خيال کي سميتي اکين پٺيان ڪنو ڪريون ٿا ته اسين ايڪتا ۾ اچي وڃون ٿا ۽ پوءِ اسان کي ان هنڌ ان جوت جو درشن ٿئي ٿو. اهو ئي ذڪر حضرت عيسيٰ بائبل ۾ ڪيو آهي.

“The light of the body is the eye; if therefore thine eye be single, thy whole body shall be full of light.”
(Matthew 6: 22)

يعني چوڻ ٿا ته جي نون هڪ اک وارو ٿين يعني ٻنهي

۽ ڪڙج ڪرڻ جي طريقي جو پتو ئي لڳائي سگهنداسين. گورو صاحب فرمائين ٿا ته جسر جا ٻه حصا آهن، هڪ اکين کان هيٺ ۽ ٻيو اکين کان مٿي. اکين کان هيٺ نون دوازن ۾ صرف اندرين جي پوڳن ۽ وشيه وڪارن جون لذتون آهن. جيستائين اسانجو خيال اکين کان هيٺ آهي تيستائين اسين مڪتي حاصل ڪري ٿي ته سگهنداسين ڇاڪاڻ ته مڪتيءَ جو دروازو اکين جي پويان رکيل آهي؛ ان جي لاهائي نشاني آهي ته ان هنڌ انهد شبد گونجار ڪري رهيو آهي. گورو نانڪ صاحب فرمائين ٿا:-

”گورو شبد ملي سي وڃڙي ناهين،

سهجي سچ سمانيان.“

جنهن وقت اسين گورسڪن جي ذريعي شبد کي پڪڙيون ٿا ته پوءِ اهو شبد اسانکي ڇڏي ڪونه ٿو. پاڻ سان گڏ وٺي هلي پرماتما ۾ سمائجي ٿو. اسانکي ان شبد جي ذريعي پنهنجي گهر جو رخ قائم ڪرڻو آهي ۽ ان شبد جي پرڪاش ذريعي پنهنجي گهر جو رستو ڏسڻو آهي. اسانجي آتما جي ڏسڻ جي شڪتيءَ کي مهاتما ’نرت‘ سڏين ٿا ۽ جا ٻڌڻ جي شڪتي آهي انکي ’سرت‘ ڪوٺين ٿا. سرت کي ان شبد جو آواز ٻڌڻو آهي ۽ نرت کي ان جو پرڪاش ڏسڻو آهي. مثال طور تي اسين پنهنجي گهر کان شام جو سِر ڪندي ڪٿي دور ڪري وڃون ٿا ۽ رات پئجي وڃي ٿي، هر طرف انڌيرو ٿي وڃي ٿو ۽ پنهنجي گهر جو رستو ئي ڀلي وڃون اهو به پتو نه پوي ته گهر ڪهڙي طرف آهي تنهن وقت به پنهنجي گهر پهچڻ واسطي ان انڌيري ۾ خاموش ٿي بيٺي رهن ٿا ۽ ڏاڍي غور سان ان سنائي ۾ ڪنهن نه ڪنهن آواز ٻڌڻ جي ڪوشش ڪريون ٿا جو اسان جي گهر جي طرف

يعني جنهن وقت اسين پنهنجي شين جي نون دوازن مان خيال ڪڍي اکين پٺيان ايڪاگر ڪريون ٿا، ان وقت اسين پنهنجي اصلي گهر جي دروازي تي پهچون ٿا. اسانجو اصلي گهر سڃڪندڙ آهي جتي پرماتما رهي ٿو. انجو دروازو اکين ٻڌائين ٿا ته ان هنڌ انحد شيد رات ڏينهن ڏنڪارون ڏيئي رهيو آهي جيسين اسين ان گهر جي دروازي تي خيال ايڪاگر ڪري ان شيد کي نه ٻڪڙ پنداسين تيسين اسانجي مڪتي حاصل ڪرڻ جو سوال ئي پيدا نه ٿو ٿئي.

آتمڪ مارگ

حضرت عيسيٰ به ان طرف ئي اشارو ڪن ٿا جڏهن فرمائين ٿا:

“Knock it shall open and seek Ye shall find.”
(Matthew 7:7)

يعني ڳولهيوندا ته توهين لهندا دروازو کڙڪائيندا ته کليدو. جي. اسانکي پنهنجي گهر وڃڻو آهي ته اول اول اسانکي پنهنجي گهر جي درجي تلاش ڪرڻي پوندي. ۽ اهو گهر جو دروازو آهي اسان جي اکين پٺيان جنهنکي ‘Third eye’، ”هڪ اک“ يا ”ٽيسرائل“ چوندا آهن. انجي ڪولڻ لاءِ اسانکي اهو کڙڪائڻو آهي يعني ٻار ٻار سمورن ۽ ڌيان جي ذريعي پنهنجي قهليل خيال کي اکين پٺيان سميتي ايڪاگر ڪرڻو آهي. جڏهن اسين اهو دروازو ٻار ٻار کڙڪايون ٿا يعني سمورن ۽ ڌيان جي ذريعي اسانجو خيال پوريءَ طرح ايڪاگر ٿئي ٿو ته اهو دروازو کلي پوي ٿو ۽ پوءِ اسانکي پنهنجي گهر وڃڻ جو رستو ملي ٿو. اهو ساڌن ڪهڙو آهي؟ خيال کي انهيءَ شيد سان جرڙڻ، جوهر هڪ جي اندر اچي رهيو آهي. ان جي ذريعي اسين واپس وڃي پرماتما کي پاڻي سگهون

آهي جو مالڪ جي درگاهه کان اٿي زهيو آهي. چاهي اسپين
 هندو ٿي اندر يعني اکين پٺيان وڃون چاهي سڪ عيسائي
 يا مسلمان ٿي اندر وڃون ته به ساڳيو آواز ٻڌڻ ۾ ايندو. ڇو
 به خوش قسمت انسان پنهنجي خيال کي اکين پٺيان ايڪاگر
 ڪري ٿو، ان جو خيال ان آواز سان جڙي ٿو. انهيءَ سادنا
 کي مهاتما ”جيئري مڙ“ سڏين ٿا ڇاڪاڻ ته خيال کي
 اکين پٺيان ايڪاگر ڪري ان مٿي ۽ سريلي آواز کي ٻڌڻ
 سان روح ۽ من نون دوارن مان آزاد ٿيندا آهن ۽ سادڪ جو
 تعلق هن دنيا سان بلڪل ٽٽي پوندو آهي. دنيا جا سڀ
 دڪ ڀلجي هڻ پنهجي اندر ان شبد جي دائمي خوشي
 محسوس ڪرڻ لڳي ٿو. ڪبير صاحب هن باري ۾
 فرمائن ٿا:

”جس هڙي سي جگ ڏري، ميري من آند.“
 گورو نانڪ صاحب به فرمائن ٿا:

”نانڪ جيونديا مر رهئي، اتسا جوک ڪمائي.“
 سينٽ پال به بائيبل ۾ فرمائي ٿو ”I die daily“ يعني مان روز
 مړندو آهيان. مسلمانن جي حديث به چوي ٿي:
 ”موتوا قبل انتم مړو.“

دادو صاحب جي مشهور مهاتما ٿي گذريا آهن، پنهنجي
 ٻائيءَ ۾ لکن ٿا:

”جيوت مائي هو رهو، سائين سمنڪ هڙي،
 دادو ٻولي مر رهو، ٻيڇي مري سڀ ڪوئي.“
 تيسري پاتشاهي گورو امر داس جن به فرمائن ٿا:
 ”ستگورو سيوي ٿان مل جاوي،
 جيوت مري هر ستن چت لاوي.“

ٺٽ يعني هرا، پاڻي ۽ اڱي آهن. جيڪڏهن اسين ٻڌڻ
 نٿن جا پٽلا ٿي ڪري نه ڪرڙ، مور ۽ ٻين پکين جو ڌيان
 ڪنداسين نه اسين انهن پکين جي ئي جوڙ پائينداسين. اسان
 جو مقصد نه انسان جي جوڙ کان به مٿي چڙهڻ جو آهي.
 تنهنڪري اهو پکين جو ڪلاس به اسانجي ڌيان ڪرڻ جي
 لائق نه آهي. چوٿون ڪلاس چوپائي جانورن جو آهي جن به
 ٻڏي يا آڪاش ٺٽ ڪونهي باقي چارئي ٺٽ موجود آهن.
 انهيءَ ڪري ڳانءِ، ڍڳو ۽ گهوڙو وغيره به اسانجي ڌيان ڪرڻ
 جي ڀڳيه نه آهي. پنجون ڪلاس خود انسان جو آهي ۽
 هر انسان به ساڳيائي پنج ٺٽ موجود آهن. تنهنڪري سڀاويڪ
 من به اهو خيال اچي ٿو ته انسان انسان جو ڌيان ڪري
 نه چو ڪري؟ خاص ڪري اڄڪلهه جي زماني به
 جڏهن اسان سڀني کي هڪجهڙا حق آهن. هاڻي اچو ته
 سرچيون نه انسان انسان جو ڌيان نه ڪري، ڊيري ڊيوٽائون
 اڄ تائين ڪنهن ڏٺا ڪونهن ۽ پرمانا جي سروب جي خبر
 ڪونهي. ان نقطي تي اچي گهڻا ماڻهو خدا جي هستيءَ
 کان ئي منڪر ٿي ويندا آهن ۽ باقي سڀ انهيءَ اجهڻ به
 ڦاسي ويندا آهن ته اسانجي ڌيان ڪرڻ لائق ڪهڙي ڇيڙ
 ٿي سگهي ٿي. مهاڻا هڪ نام سنو مثال ڏيئي سمجهائين
 ٿا ته جيڪڏهن ڪنهن ڪمري ۾ گهڙائي رهندو سبت رکيا
 هجن پر انهن مان ڪو به بجليءَ يا بٽريءَ سان ڳنڍيل
 (connected) نه هجي ته اسان ڪڏهن به ڪنهن به ملڪ جون
 خبرون چارون وغيره انهن مان ٻڌي نه سگهنداسين ڇاڪاڻ
 ته ڪو به رهندو سبت ٽڙهن وڃندو جڏهن اهو بجليءَ
 يا بٽريءَ سان جڙيل هوندو ۽ جي ان مان ڪو به رهندو
 بجليءَ يا بٽريءَ سان جڙيل هوندو ته ان ذريعي هڪدم
 اسان ڪنهن به ملڪ جون خبرون چارون ۽ سنگيت وغيره

[illegible]

دنيا جي ناسونيت ۽ فنا ڇيڙن جو سمون ڪري اسان انهن سان مره ۽ پيار پائي ويٺا آهيون. انهن مان ڪا به ڇيڙ اسان جو سات نه ڏيندي. انهن شڪلين ۽ پدارتن جو مره ۽ پيار اسان کي ٻار ٻار ڏيهه جي ٻڌڻن ۾ آڻي ٿو. اسين ان مالڪ جي نام جو سمون ۽ ڌيان ڪريون جو ڪڏهن به فنا نٿو ٿئي ۽ جنهن پرماتما جي اسانجي آتما انش آهي ۽ جنهن پرماتما جي اندر اسانجي آتما سمائجڻ چاهي ٿي. گورو نانڪ صاحب فرمائين ٿا:

”نهچل ايڪ آپ اباڻشي، سو نهچل جو نسي ڌيائيندا.“

يعني اهو پرماتما نهچل آهي. ڪڏهن به ڄمڻ مرن جي دڪن ۾ نٿو اچي ۽ جو به هن جو ڌيان ڪري ٿو، هن سان پيار ڪري ٿو ۽ هنجو سمون ڪري ٿو سو به نهچل ٿي وڃي ٿو ۽ جنم ۽ مرن جي دڪن کان چوٽڪارو پائي ٿو. اسان کي پنهنجي خيال کي اکين پويان ٽڪائي مالڪ جي نام جو سمون ڪري پنهنجي ڦهليل خيال کي اتي ايڪاگر ڪرڻو آهي. اهو طريقو اهڙو نه آسان ۽ سول آهي جو ننڍي ۾ ننڍي ٻار کان وٺي وڏي ۾ وڏي عمر وارو انسان به آسانيءَ سان ڪري سگهي ٿو ڇاڪاڻ ته سمون ڪرڻ جي عادت نه قدرتي سڀ ڪنهن کي پيل آهي. اسان کي صرف دنيا جي سمون کان من ڪڍي ان مالڪ جي نام جي سمون ۾ لڳائڻو آهي. جنهن وقت سمون جي ذريعي اسانجو خيال اکين پويان ڪنڊو ٿئي ٿو ته من ان هنڌ ٽڪي ڪونه ٿو ڇاڪاڻ ته من کي ٻار ٻار نون دوارن جي ذريعي ٻاهر دنيا ۾ پٽڪڻ جي عادت پيل آهي. اتي اندازي ۾ من کي هڪ هنڌ بهارڻ ڏاڍو مشڪل ٿي پوندو آهي، جيستائين ان هنڌ من کي ڪنهن جي سروب جو ڌيان نه ڏينداسين ۽ ان کي اتي بهارڻ واري با ٽڪائڻ واري ڇيڙ نه ملندي جيستائين من جو اتي ٽڪڻ

Handwritten text in a cursive script, likely Persian or Urdu, arranged in approximately 25 horizontal lines. The text is written in dark ink on a light background. The script is highly stylized and dense, with many characters appearing to be ligatures or variations of a few basic forms. The lines are closely spaced and run diagonally across the page from top-left to bottom-right. The overall appearance is that of a manuscript or a collection of notes.

دروازو“ سڏيو آهي. رشين منين اُنکي ”شونيت“ يا
 ”دوہ چڪشو“ چئي سمجهايو آهي. گورو نانک صاحب ان
 کي ”تل“ يا ”تيسرا تل“ ڪري سڏين ٿا. جي اسان کان
 ڪا ڳالھ وسري وڃي ۽ اُنکي ياد ڪرڻ پوي ته اسانجو هٿ
 خود بخود قدرتي طرح پيشانيءَ تي رکجي ويندو آهي. پليل
 ڳالھ کي ياد ڪرڻ لاءِ اسين ڪڏهن به پنهنجو هٿ ننگن يا
 ٻانھن تي ڪونه رکندا آھيون. ٻنهي اکين جي وچ ۽ پويان
 جيڪا جڳھ آهي، ان سان اسان جي سرچڻ جو گھرو تعلق
 آهي. هر ڪنھن جو خيال ان جاءِ تان هيٺ لهي نٿو (۹)
 دوارن جي ذريعي سڄيءَ دنيا اندر ڦهلائي وڃي ٿو.
 گورو زامداس صاحب فرمائين ٿا:

”من کن ڪن ڀرم ڀرم بهو ڏاوي،
 تل گھر نهين واسا پائي.“

.....

”گورو انڪس سبد دارو سر ڌارين،
 گھر مندر آن وسائي.“

يعني اسانجو خيال تيسري تل کان هيٺ لهي منت منت
 ۾ ساريءَ دنيا ۾ ڦهلائي وڃي ٿو، ۽ من هڪ کن لاءِ به اکين
 پٺيان ٺڪي نٿو ۽ جيستائين من اکين پٺيان نه ٺڪندو جيستائين
 من پنهنجي گھر ترڪي ۽ ۾ نه وڃي سمائبو.

اھي ٽي دروازا اسانجي شرير ۾ ڪهڙا آهن؟ به اڪيون، به
 ڪن جا سوراخ، به ٺڪ جا سوراخ، هڪ واٽ ۽ به هيٺين
 اندرين جا سوراخ. انھن ٽن دوارن جي ذريعي اسانجو خيال
 سڄيءَ دنيا ۾ ڦهلائي ٿو. ڪنھن به اندري ڪوئيءَ ۾
 چو نه وڃي وھون ۽ ان ڪوئيءَ کي ڪيترا به ٻاھران ڪلف
 چو نه لڳل هجن تڏهن به اسانجو من اُتي نه هوندو، ٻاھر

يعني پرميشور آتما آهي ۽ اهو ضروري آهي ته انجي
 ڀڄڻ ڪرڻ واري آتما سڃاڻي ۽ سان ڀڄڻ ڪري.
 ڪبير صاحب سمجھائين ٿا:

”جب هي نام هردي ڌريو پيڙ پاپ ڪا ناش، -
 جڏي چنگي آڱ ڪي پڙي پراڻي گھاس.“

جنهن وقت اسانجي هردي اندر نام پرگھٽ ٿئي ٿو ته انهن
 سڀني ڪرمن جو سلسلو ختم ٿي وڃي ٿو جن جي ڪري اسان
 هن دنيا جي ٻڌڻن ۾ ڦاٿل آهيون. جهڙيءَ طرح ڪو سڪل
 گاهه جو ڍڀر چاهي ڪيترو به وڏو هجي تڏهن به ان سموري
 ڍڀر کي باهه جي هڪ ڇٽڪ جلائي ختم ڪري ڇڏيندي
 اهڙيءَ طرح اسان ماما ڌاري جيون ڪيترا به ڪوٺا ۽ زبردست
 پاپ چور نه ڪيا هجن ته به اها نام جي ڪمائي اسان جي سڀني
 ڪرمن جو حساب ختم ڪري ڇڏي ٿي. دريا صاحب
 فرمائين ٿا:

”دريا سمري رام ڪو ڪرم پرم سڀ ڪوئي،
 پورا گورو سر پر ٿئي بگهن نه لاڳي ڪوئي.“
 اهڙيءَ طرح گورو نانڪ صاحب فرمائين ٿا:
 آن آن سمڌا بهو ڪيني پل بڻسٽر پسر ڪريجي،
 مها اگر پاپ ساڪت نر ڪيني مل سادو ٿو ڪي ديجي،
 سوامي جي مهاراج جن به فرمائين ٿا:
 ”شبد ڪرم ڪي رڳ ڪتاوي،

شبد شبد سي ڄاڻي ملاوي.“

حضرت عيسيٰ به بائيبل ۾ چوڻ ٿا:

Now ye are clean through the Word which I
 have spoken unto you.” (John 15 : 3)

يعني تون ان وچن (شبد) جي ڪري شد آهين جو مون

اهڙيءَ طرح گورو امر داس صاحب لکن ٿا :

”نامي هي تي سڀ ڪچ هونٿا.“

جو ڪجهه به اسين هن دنيا ۾ ڏسون ٿا اهو سڀ نام تي پيدا ڪيو آهي. بائيبل ۾ سيدت جان لکيو آهي :

“In the beginning was the Word. and the Word was with God, and the Word was God. The same was in the beginning with God. All things were made by Him; and without Him was not anything made that was made.” (John 1 : 1 : 2 : 3)

يعني شروع ۾ شيد هو ۽ شيد ۾ميشور سان گڏ هو ۽ سڀ ڪجهه ان وسيلي تي پيدا ٿيو ۽ جيڪي به آهن ٿيو آهي ان ۾ ڪا به وسٽو ان کان سواءِ پيدا نه ٿي آهي. رشي مني به ويدن شاسترن ۾ اهوئي ذڪر ڪن ٿا ته ۾ماتما آڪاش ۾اٽمي جي ذريعي دنيا جي رچنا ڪئي آهي. قرآن شريف جي اندر به آيل آهي ته ان ”ڪلمي“ يا ”ڪن“ جي ذريعي خدا دنيا پيدا ڪئي. چين وارن جي فلاسافيءَ ۾ به اهوئي ذڪر اچي ٿو ته ”ٽائو“ (Tao) دنيا جي رچنا پيدا ڪئي. گورو نانڪ صاحب به فرمائين ٿا :

”شدي ڌرتي شدي آڪاش،

شدي شدي پڇيا ۾ڪاش،

سگلي سرشت شيد ڪي پاڇي،

نانڪ شيد گهٽي گهٽ آڇي.“

شمس تيراز به چون ٿا :

”عالم از صوت اين ظهور گرفت،

از حضورش بساط نور گرفت.“

اسان خرد اندازو لڳائي سگهون ٿا ته جنهن طاقت دنيا جي رچنا ڪئي آهي اسان انجي تواربخ ڪهڙي بيان ڪري

سڀ جهڳڙا فساد ٿيسين آهن جيستائين اسان اُن سڄي شيد کي وساري وٺيا آهيون ۽ صرف انهن لفظن سان پيار لڳائي وٺيا آهيون. هر هڪ مهاڻا اسان کي انهن لفظن ۽ ڀومن مان ڪڍي اُن سڄي شيد سان جوڙڻ واسطي، ميلاپ ڪرائڻ واسطي اچي ٿو. جهڙيءَ طرح ماءُ پنهنجي پيار ۾ اچي پنهنجي پٽ کي ڪيترن ئي لفظن سان سڏيندي آهي، پر ماءُ پٽ جو نالو يا رشتو ڪوئي لفظن جو رشتو نه آهي. اهو نه پيار جو نالو آهي. اهي لفظ نه صرف ماءُ جي پيار کي ظاهر ڪن ٿا ۽ بيان ڪن ٿا. اهو پيار خود ڪا به چيز آهي ۽ لفظ ڪا به چيز آهن. اهڙيءَ طرح مالڪ جي ڀڳتن ۽ پيارن ڪيترن ئي لفظن سان اُن پرماتما کي ياد ڪيو آهي. اصل ۾ اُن مالڪ جو ڪو به نالو ڪونه آهي. جئن مولانا روم صاحب فرمايو آهي:

”بنامِ او ڪ نامي ندارد،

به هر نامي ڪ خواني سر بر آرد.“
يعني ته اُن جي نالي سان شروع ڪريان ٿو جنهنجو ڪوبه نالو ڪونه آهي ۽ جنهن به نالي سان اُن کي پڪاريون ٿا ته هو جواب ڏئي ٿو. اهي لفظ نه اُن مالڪ جي پيارن ۽ ڀڳتن جي پريم کي ظاهر ڪن ٿا. هي جيڪي به لفظ آهن سي سڀ ورن آتمڪ شيد آهن. پر جيڪو آتما جو پرماتما سان پيار آهي اهو سچو شيد آهي، سچو نام آهي. اُن سڄي نام جي ڪا به تواريخ ٻڌائي نه ٿي سگهجي ۽ نه ڪي اُن جو معياد مقرر ڪري سگهجي ٿو ڇاڪاڻ ته اُن سڄي شيد نه دنيا جي رچنا پيدا ڪئي آهي. اُن جي آڌار تي اسانجا ڪنڊ بزمند هلي رهيا آهن. اسان سڀني کي اُن جوئي آسرو آهي. گورو نانڪ صاحب فرمائين ٿا:

”اوت پرلي شدي هروي،
شدي هي تر اوت هروي.“

لفظ جي تراريج ٻڌائي سگهجي ٿي ۽ معياد مقرر ڪري سگهجي ٿو. هي جيڪي ورن آتمڪ شبد آهن رهي چئن قسمن جا آهن. پرا، پشيتي، مڌما ۽ بيڪري. پھريون قسم اھو جو زبان سان چيو وڃي ٿو. جھڙيءَ طرح اسان هڪٻئي سان هر روز ڳالھ ٻولھ ڪندا آھيون. ٻيو اھو جو ڪنھن ۾ آھستي آھستي چوڻدا آھيون. ٽيون ھردي ۾ ۽ چوٿون اھو جو ناپيءَ ۾ بڻجي پيش ھلوز سان اچاريندا آھن. اھي سڀئي شبد ورن آتمڪ آھن. انھن ۾ ڪوبه سچو نام ناھي. سوامي جي مھاراج پنھنجي ٻاڻيءَ ۾ فرمائين ٿا:

”نام نرنه ڪرون پاڻي، دڏا وڌي پيد بتلائي،

ورن ڌن آتمڪ گائون، دوٿو ڪا پيد درسائون.

ورن ڪهر چاهي ڪهر اڪشر، جو ٻولا ڄاڻي رسنا ڪر،

لکن اور ٻڙهن ۾ آيا، اسي ورن آتمڪ ڳايا.“

جو نام لکن، ٻڙهن ۽ ٻولن ۾ اچي ٿو ۽ جنهنجو معياد

مقرر ڪري سگهجي ٿو ۽ تراريج ٻڌائي سگهجي ٿي، ان کي

مهاٿما ورن آتمڪ شبد سڏين ٿا. پر جنهن نام جي هر هڪ

مهاٿما مهم ڪري ٿو ۽ جنهن نام جي ڪمائي ڪري اسان کي

مڪتي حاصل ڪرڻي آهي، من کي قابو ڪرڻو آهي، روح

۽ من جي ڳنڍ ڪرڻي آهي ۽ پنهنجو پاڻ سڃاڻي مالڪ سان

ملڻ جي قابل ٿيڻو آهي، اهو ڌن آتمڪ نام يا سچو نام آهي.

مهاٿما صرف ان سچي نام جي مهم ڪن ٿا. اهو سچو نام

نه لکن ۾ اچي ٿو، نه ٻڙهن ۾ ۽ نه چوڻ ۾ اچي ٿو. ان

کي حضور مھاراج جن اڻ لکيل قاعدو ۽ اڻ لکيل ٻاڻي

(Unwritten law and Unwritten language) چئي سمجھائيندا

ھئا. ڪرائيسٽ به ان نام جو اشارو بائيبل ۾ ڪيو آھي.

“Because they seeing see not; and hearing they

hear not.”

(Matthew 13: 13)

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 846. 847. 848. 849. 850. 851. 852. 853. 854. 855. 856. 857. 858. 859. 860. 861. 862. 863. 864. 865. 866. 867. 868. 869. 870. 871. 872. 873. 874. 875. 876. 877. 878. 879. 880. 881. 882. 883. 884. 885. 886. 887. 888. 889. 890. 891. 892. 893. 894. 895. 896. 897. 898. 899. 900. 901. 902. 903. 904. 905. 906. 907. 908. 909. 910. 911. 912. 913. 914. 915. 916. 917. 918. 919. 920. 921. 922. 923. 924. 925. 926. 927. 928. 929. 930. 931. 932. 933. 934. 935. 936. 937. 938. 939. 940. 941. 942. 943. 944. 945. 946. 947. 948. 949. 950. 951. 952. 953. 954. 955. 956. 957. 958. 959. 960. 961. 962. 963. 964. 965. 966. 967. 968. 969. 970. 971. 972. 973. 974. 975. 976. 977. 978. 979. 980. 981. 982. 983. 984. 985. 986. 987. 988. 989. 990. 991. 992. 993. 994. 995. 996. 997. 998. 999. 1000.

يعني ته شيد ايترو ته مهان آهي جيترو برهم.
ست پٽ برهم ۾ لکيل آهي:

”واڪ ايو برهم“

يعني ته شيد ئي برهم آهي. اسانجو لفظن سان ڪوئي
بحث ناهي. اسانکي ته ان روحانيت جي ڪوچ ڪرڻي آهي
جنهنجي مهما هر هڪ مهاڻا ڪري ٿو ۽ جنهنکي پاڻي اسانجو
من قابو اچي وڃي ٿو ۽ واپس وڃي پنهنجي نڪاڻي تي
پهچي ٿو. جيستائين اسان اهو نه سمجهيو آهي ته مهاڻا ’شيد‘،
'نام'، 'واڪ'، 'باڻي' چاڪي چون ٿا ۽ اهو ڪٿي آهي ۽
ٿا يا اسانکي ان نام جي ڪهڙي ضرورت آهي ته جيستائين
اسين چاهي ڪنهن به مهاڻا جي باڻي يا گرنت پوڻيون پڙهندا
رهون ته به اسين ان مان ڪڏهن به پورو پورو فائدو نه وٺي
سگهنداسين.

مهاڻائن جي باڻيءَ ۾ بار بار سڃي شيد، سڃي نام يا سڃي
باڻيءَ جو ذڪر اچي ٿو. گرو نانڪ صاحب جن فرمائين ٿا:
”سڃي شيد سڃي پٽ هوني.“

سپاويڪ من ۾ اهو خيال ضرور اچي ٿو ته شايد بي به ڪا
باڻي يا پيو به ڪو شيد يا نام آهي جو سچو نه آهي.
جيڪي شيد جو مطلب ان باڻيءَ، شيد يا نام سان آهي جو
ڏهين به فنا نه ٿو ٿئي. مهاڻا اُپديش ڪن ٿا ته شيد يا نام
قسمن جو آهي. هڪ ورن آتمڪ پيو ڌن آتمڪ.
ني جيڪو اسين زبان سان چئي سگهون ٿا. هي جيڪي
اسان پيار ۾ اچي ان پرمانا جا رکيا آهن يعني الله،
واڏا سوامي، هري اوم، پرمانا، پر ميسور وغيره اهي

بنا شبد يه من نهين جاڳي،

گرو چاهي ڪوئي اٺڪ وڌان. ”سوامي جي مهاراج هڪ ٻئي شبد ۾ به چڱيءَ طرح سمجھائين ٿا:

”ڀڙا پيري يه من گهٽ ۾، اسي ڪا جيتنا ڪنڀا.
پرو ٿر اس هي ڪي پيچي، اوز سب هي جتن ٿجنا.
گورو ڪي پريت ڪر پھلي، بهور گهٽ شبد ڪوسنا
مان دو بات يه ميري، ڪري مت اور ڪڇ جتنا.“
گورو نانڪ صاحب فرمائين ٿا:

”سڄي نام سدا من سڄا، سچ سيري دک گراوڻيا.“
صرف سڄي شبد ۽ سڄي نام جي ڪمائي ڪري ئي
اسانجو من ٽرمل ۽ پور ٿيڻو. سڄي شبد جي ڪمائي ڪري
ئي اسين چوراسيءَ جي دکن کان بهي سگھون ٿا. وري
ٻئي هنڌ هڪ تمام سٺو مثال ڏين ٿا:

”گورمک ٿارڙ جي سني مٺي ٺاءُ سنٽوڪ.“
يعني جي ڪنهن کي نانگ ڏنگ هڻندو آهي ته انجي
علاج لاءِ، انجي زهر ڪڍڻ لاءِ ڊاڪٽر وٽ ويندا آهيون.
هنجي دوا جي ذريعي نانگ جو زهر لهي ويندو آهي.
هنڙيءَ طرح جي اسين من روپي نانگ جو زهر پنهنجي اندر
ن ڪڍڻ چاهيون ٿا ته اسانکي گورمکن وٽ وڃي پنهنجي
مال کي شبد ۽ نام سان جوڙڻو پوندو. من کي قابو ڪرڻ لاءِ
ڪوئي علاج يا طريقو ڪونهي. گورو نانڪ صاحب هڪ
هنڌ فرمائين ٿا:

”رام نام من بيديا، اور ڪي ڪري وڃار.“
يعني جڏهن اسانجو من، جو وشيه وڪارن ۽ دنيري موه
۾ ٿاسي هرڻ وانگر پيو پٽڪي، اهو جنهن وقت رام نام

۽ پڙهيا. پراڻا ٻار، نولي ڪرم ۽ هٿ پوک جون ڪن ڪريائون
۽ ڪري ڏنل. ڪنڊلني کي جاڳائڻ جو ٻن ڪير پڙ نه ۽
ٻنجن ڊاڪن يعني ڪار، ڪروڙ، لوپ، موه ۽ اهڪار
پيڇو نه ڇڏيو. اڳتي گورو صاحب فرمائين ٿا:

”موني پيو ڪريائي رهيو ننگن ڦريو ٻن ماهين،
ت تيرت سب ڌرتي ڀرميو ڊڊا چٽڪي ٺاهين.

من ڪامنا تيرت ڄائي بسير سر ڪروڙ ڌرائي،
من کي ميل نه آري اهو ٻڌجي لڳ جتن ڪرائي.

چون ٿا ته مون رکير يعني ڳالهائڻ بند ڪير، گهر ٻار
ڇڏي جهنگلن پهاڙن ۾ به ويس، ڪوڙا پرتل وغيره ٿيا ڳي
صرف هٿن جي ذريعي ڪاڌم پيتر ۽ دنيا جا سڀ تيرت به
پيتر، سڄي ڌرتيءَ جي پوک ڪير ۽ پيا به ڪيترا اهڙا
مشڪل ساڌن ڪير پڙ ٺاهين. ۽ من جي ميل نه ٿي. من کي
قابو ڪرڻ لاءِ ڪاشيءَ وڃي ڪروڙ سان سر به ڪٽاير ۽
اهڙي قسم جا پيا به لکين جتن ڪير ليڪن من جي ڊڊا نه
وڃي. سائين ٻلي شاهه به ائين ئي پڪارين ٿا:

”نه خدا مسيتي ليدا، نه خدا خانہ ڪعبي،

نه خدا قرآن ڪتبان، نه خدا نمازي.

نه خدا مٿن تيرت ڏٺا، اڀرين پٽنڊي جهڳڙي،

بلا شاهه ڇڏ مرشد مل ڳيا، مٿي سب نگادي.

من کي قابو ڪرڻ جو صرف هڪ ئي علاج آهي ته ان
کي شيد يا نام جي لڏت ڏني وڃي. جئن جئن هي من شيد
۽ نام جي لڏت حاصل ڪندو تئن تئن هنجو دنيا مان موه ۽
پيار نڪرڻ شروع ٿيندو. شيد جي لڏت ۽ ڪشش هنڪي
دنيا کان الڳ ڪندي. سرامي جي مهاراج جن به سمجهائين ٿا:

”ڪوٽ جتن سي ٻه ٺهين ماني،

ڏن سن ڪر من سمجهائي.

اچيس ٿي نه هو هڪدم پهرين ڇڏي ٻيءَ جي پويان ڊوڙ ۾
 شروع ڪري ٿو. ڪوئي نه موه يا پيار سانجي من کي
 هميشه لاءِ قابو ڪري نه ٿو سگهي. اسان جو پنهنجي پنهنجي
 زندگيءَ جو تجربو آهي نه اهي شڪليون ۽ ڀڌارت جن کي
 اسان ڪنهن وقت پنهنجي ٻڌاڻ جي ڪوشش ڪندا هئاسين
 ۽ سمجهندا هئاسين ته انهن کان سواءِ اسانجو زندو رهڻ مشڪل
 بلڪ ناممڪن آهي، اڄ انهن ئي شڪلين سان اسان جو
 من نفرت ڪري ٿو ۽ انهن کي ڏسڻ نه پسند نه ٿو ڪري.
 اها ڳالهه ته عالم آ شڪار آهي ته من بدل بدل (Variety)
 جو عاشق آهي. هڪ ئي چيز کي ڏسي ڏسي ۽ کائي کائي
 تنگ ٿي پوندا آهيون. پنهنجي سڄي زندگيءَ کي اکين
 اڳيان رکي ويچار ڪري ڏسو ته بالهڻي پر اسان جو ماءُ پيءُ
 سان ڪيترو نه پيار هو. جي ماءُ اسان کان به مت به الڳ
 ٿيندي هئي ته اسين هڪدم روئڻ شروع ڪندا هئاسين، پر
 جڏهن به ٿي ڀاڻو پيو اچي ويا ته اهوئي ماءُ سان لڳل پيار
 ڀائرن ۽ پيرون سان لڳي ويندو هو. ان کانپوءِ جنهن وقت سڪول
 يا ڪاليج ۾ داخل ٿيندا آهيون ته اهوئي پيار دوستن سان ٿي ويندو
 آهي. شاديءَ بعد ته اهو پيار زال ۽ ٻارن اچن پر سماجي ويندو
 آهي. بزرگ ٿيندا آهيون ته اهوئي پيار قومن، مذهبن ۽ ملڪن
 تائين پهچي ويندو آهي. پيار هڪڙوئي آهي پر ڪيترا نه.
 روپ ۽ شڪليون ٿو بدلي. پر ڪو پيار سانجي من کي هميشه لاءِ
 قابو نه ٿو ڪري سگهي. ڇاڪاڻ ته اسانجو من لذت جو عاشق
 آهي تنهنڪري جيسين اسان جي من کي دنيا جي لذتن،
 موه ۽ پيار کان وڌيڪ اچي ۽ سٺي لذت، موه يا پيار نه
 ملندو تيسين هي من دنيا جي لذتن، سوادن، موه ۽ پيار
 ۾ ڇڏڻ لاءِ ڪڏهن نه تيار ڪونه ٿيندو. اها ڪهڙي چيز
 لذت آهي جنهن کي حاصل ڪري اسانجو من دنيا جي

۱۷
وس ڪرڻ لاء هزارين طريقن سان ڪوشش ڪريون ٿا.
جب ٽپ ڪريون ٿا، پرڇا پاٽ ڪريون ٿا، گرنت پوئيون
۽ ويد شاستر پڙهون ٿا، دان ٻيڇ ڪريون ٿا ۽ ڪئين قسمن
جا هون يگيه به ڪريون ٿا. ايتري قدر جو گهر ٻار ڇڏي
جهنگل ۽ ٻهاڙن ۾ وڃي لڪن ٿا. اهي سڀ ساڌن ۽ طريقا
صرف من کي وس ڪرڻ لاء ڪريون ٿا. اسين هٿ ڪرمن
جي ذريعي، پنهنجي خيال کي دنيا کان موڙڻ جي ڪوشش
ڪريون ٿا. پر ڇاڪاڻ ته اسانجو خيال ٻيء ڪنهن به بهتر
شيء سان جڙي ڪونه ٿو تنهنڪري دنيا اندر ئي پٽڪو
شروع ڪري ٿو. دنيا مان زبردستي پنهنجي خيال کي -
ڪڍڻ ائين آهي جئن ڪنهن زهريلي نانگ کي ٽوڪريءَ
۾ بند ڪجي. جيترو عرصو هو ٽوڪريءَ ۾ بند هوندو اسين
ان نانگ جي زهر ۽ ڏنگ کان بچيل رهنداسين. پر جڏهن
به هڪي ٻاهر نڪرڻ جو وجهه ملندو ته هو ڏنگ ضرور
هڻندو، ڪڏهن به پنهنجي عادت کان باز نه ايندو. انڪري
ڪنهن نانگ کي ٽوڪري اندر بند ڪرڻ سان اسين هميشه
لاءِ انجي زهر کان چٽي ٿي سگهون. اسان کي پنهنجي جان
جو خطرو لڳو ئي رهندو. پر جيڪڏهن ان نانگ کي
پڪڙي انجي زهر جي ٿيلهي تي ڪڍي ڇڏيون ته اهو
نانگ نقصان پهچائي ڪونه سگهندو ۽ نڪي ڏنگ هڻي
سگهندو ۽ اسين هميشه لاءِ بي خوف ٿي پونداسين پوءِ چاهي
اسين ان نانگ کي پنهنجي گلي ۾ وجهي گهمون ته به ڪجهه
ڪري نه سگهندو. اهڙيءَ طرح اسين جڏهن ٻارن ٻچن کي
نياڳي جهنگل ۽ ٻهاڙن ۾ وڃي ٿا لڪرن يا گرنت پوئيون ۽
ويد شاستر پڙهون ٿا ته ائين ٿا سمجهون ته جيئن اسان جو من
اسان جي قابو ۾ اچي ويو آهي يا وس آيو آهي. پر وري
جڏهن دنيا جو مقابلو ڪرڻو پوي ٿو ته اهيئي خواهشون ۽

پنهجي لڪاڻي پهچندو. اسانڪي جيڪا به ڪوشش ڪرڻي
 آهي سا اها نه روح ۽ من جي ڳنڍ ڪلي. ان لاءِ سقراط به
 چيو آهي ته ”پنهجو پاڻ سڃاڻ“ ”Know Thyself“. اهو
 گورو نانڪ صاحب به سمجهائين ٿا:

”سو جن نرمل جن آپ پڇاتا.“

اهڙي شخص نرمل ۽ پوڙ آهي جو پنهنجو پاڻ سڃاڻي
 ٿو. ڪبير صاحب به ائين ئي فرمائين ٿا:

”سادو سنگورو الڪ لکايا جب آپ آپ درسايو.“

سوامي جي مهاراج به فرمائين ٿا:

”آپ آپ ڪو آپ پهچانو، ڪها اور ڪا نيڪ نه مانو.“

پنهجو پاڻڪي ڄاڻڻ جو مطلب اهو آهي ته اسانڪي من
 مايا جي حد کان پار وڃڻو آهي. اسان کي پنهنجي آتما تان
 ٽيئي ٻڌا (اسٽول، سڪير ۽ ڪارڻ) لاهڻا آهن ۽ رڃو ڳو،
 وڃي پنهنجي پاڻ جو پتو لڳندو ۽ پنهنجي اصليت جي
 خبر پوندي. اسانجي آتما ته بلڪل نرمل، پوڙ ۽ پاڪ هئي
 پر من جو ساٿ ڪرڻ جي ڪارڻ اُتي ڳندي ۽ پست
 ٿي چڪي آهي. مثال طور بادل ۾ پاڻي ڪهڙو نه صاف ۽
 سنو هوندو آهي، پر جنهن وقت اهو پاڻي اُرسات بڻجي
 وين ٿو ته ڪهڙو نه گندو بڻجي پوي ٿو ايتري
 در جو ان مان بدبوءِ اچڻ شروع ٿئي ٿي. هو پنهنجي
 اصليت کي صفا پلائي وهي ٿو ۽ پنهنجو پاڻ کي گندگيءَ جو
 پ سمجهڻ شروع ڪري ٿو. پر جڏهين ان گندگيءَ کي
 ڇڏي ٿو تڏهين ان کي پنهنجي پاڻ جي خبر پوي ٿي
 ان ڇا آهيان. جنهن وقت هنکي پنهنجي پاڻ جي ڄاڻ
 ٿي ته پوءِ هو پنهنجي اصليت متعلق سوچي ٿو ۽ پوءِ

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

١٤١

۳۳

ويٽا آهيون ۽ انهن پدارتن کي پنهنجو ڪرڻ جي
 ڪوشش ڪري رهيا آهيون. ليڪن اهي اڃ تائين نه ڪنهن
 جا ٿيا آهن ۽ نه ئي سگهندا. پر جڏهن انهن کي اسين پنهنجو
 ڪرڻ جي ڪوشش ڪريون ٿا ته اهي اسان کي پنهنجي موه
 ۾ ڦاسائي رکن ٿا ۽ انهن پدارتن ۽ شڪلين سان اسانجو اهڙو
 نه پيار ٻجهي ٿو وڃي جو ذات ڏينهن سمجهن ته انهن جا ئي
 اچڻ شروع ٿين ٿا ۽ موت جي وقت انهن جون ئي شڪليون
 اسانجي اکين اڳيان سڳيما جي پردي وانگر ڦرڻ شروع
 ڪن ٿيون. جنهن طرف به اسانجو خيال موٽ جي
 وقت وڃي ٿو، اسان دنيا جا جيو ان طرف ئي وهي وڃون
 ٿا. اهو دنيا جي شڪلين ۽ پدارتن جو موه ٿي آهي جو
 اسان مان هر هڪ کي بار بار هن دهر جي پنڌن ۾ ڇڪي
 آڻي ٿو. ڪرائيسٽ به بائيبل ۾ سڃاڻي ٿو:

“And man's foes shall be they of his own household.”
 (Matthew 10 : 36)

ته انسان جا ويري انجي گهر وارا ئي ٿيندا آهن. وري اڳتي
 ٻڌائين ٿا ته اسانجا سڃا رشتيدار ڪير آهن:

“For whosoever shall do the Will of my Father
 which is in Heaven, the same is my brother and
 sister, and mother.”
 (Matthew 12 : 50)

جو به منهنجي سر ۾ واري پتا جي اڃا انوسار هلي اهو ئي
 منهنجو ڀاءُ، ڀيڻ ۽ ماءُ آهي.

اسانجو دن

دنيا جي شڪلين ۽ پدارتن سان موه ڪير ٿو ڪري؟
 اهو اسانجو من ٿي آهي جو انهن شڪلين ۽ پدارتن سان موه
 لڳائي وينو آهي. انڪري جيڪڏهن آتما ۽ پرماٽما جي

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

— १७५ —

11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 846. 847

“॥ श्रीगणेशाय नमः ॥”

ਜੀ ਜਗ ਭੇ ੫ ਭਵੰਤੀ ਜਾਓ ॥੧੦॥

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840.

"And again I say unto you, it is easier for a camel to go through the eye of a needle, than for a rich man to enter into the Kingdom of God."

၁၈၇၆ ခုနှစ် ဇန်နဝါရီလ ၁ ရက်နေ့

[illegible]

آهي. ليڪن پاڻ ۾ ميلاپ ٿي نه ٿيو اٿن يعني نه آتما به
 شرير اندر آهي ۽ پرمانا به شرير اندر آهي. پر نه ڪڏهن
 آتما پرمانا جو درشن ڪيو ۽ نه ڪڏهن سهڻو ٿي. وري
 پاڻ ئي جواب ٿا ڏين ته پرمانا هزار اسانجي شرير اندر آهي
 پر اسانجي ۽ مالڪ جي وچ ۾ ”هومي“ جي وڏي زبردست
 رڪاوٽ آهي. ڪرو نائڪ صاحب فرمائين ٿا:

”هون وچ آيا، هون وچ گيا،

هون وچ جيا، هون وچ ميا،

هون وچ دٿا، هون وچ ليا،

هون وچ ڪٿيا، هون وچ گيا،

هون وچ سڃار ڪوڙيار،

هون وچ سورگ نرڪ اوتار.“

وري فرمائين ٿا:

”جيون مڪت سو آڪيئي، جس وچون هومي ڄائي.“

وري اڀدش ڪندا:

”هومي ديرگه روڪ هٿ، دارو پي اس مانه،

ڪرپا ڪري جي آڀي، ڪرو ڪا سيد ڪمانه.“

يعني اسين جيئري ٿي مڪتي پائي سگهون ٿا جي اسانجي

اندر مان هومي جي رڪاوٽ دور ٿي وڃي. ڪرو امر داس

صاحب فرمائين ٿا:

”هر جيو سڃا اونچو اونچا، هومي مار ملاو پٿان.“

يعني اهو پرمانا لافاني آهي يعني سڃندڙ جي رهڻ وارو

آهي. پر جيسين هومي جي رڪاوٽ دور نه ڪنداسين تيسين

ان پرمانا سان ملي نه سگهنداسين. دادو صاحب به

سمجهائين ٿا:

”دادو دعويٰ دور ڪر، ان دعويٰ دن ڪات،

ڪيتي سودا ڪر گئي، پيساري ڪي هات.“

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

1711 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1041 1042 1043 1044

[illegible][illegible]

ה'תשנ"ב

אשר לא ידעו כי יבא אליו ויגידו לו כי יבא אליו ויגידו לו כי יבא אליו

(Handwritten signature)

[illegible]

11/11/2023

16/11/1960

[illegible]

ה'תש"ב י"ב כ"ב

[illegible]

၂၃၆။ ပုဏ္ဏားတို့၏ နှစ်စဉ် နှစ်စဉ် နှစ်စဉ် နှစ်စဉ် နှစ်စဉ်

၁၈၆၁ ခု ဇူလိုင်လ ၁၆ ရက်နေ့ နေပြည်တော်၌
 နေပြည်တော် အောက်တိုဘာလ ၁၈၆၁ ခု

1870 1871 1872 1873 1874 1875 1876 1877 1878 1879 1880 1881 1882 1883 1884 1885 1886 1887 1888 1889 1890 1891 1892 1893 1894 1895 1896 1897 1898 1899 1900 1901 1902 1903 1904 1905 1906 1907 1908 1909 1910 1911 1912 1913 1914 1915 1916 1917 1918 1919 1920 1921 1922 1923 1924 1925 1926 1927 1928 1929 1930 1931 1932 1933 1934 1935 1936 1937 1938 1939 1940 1941 1942 1943 1944 1945 1946 1947 1948 1949 1950 1951 1952 1953 1954 1955 1956 1957 1958 1959 1960 1961 1962 1963 1964 1965 1966 1967 1968 1969 1970 1971 1972 1973 1974 1975 1976 1977 1978 1979 1980 1981 1982 1983 1984 1985 1986 1987 1988 1989 1990 1991 1992 1993 1994 1995 1996 1997 1998 1999 2000 2001 2002 2003 2004 2005 2006 2007 2008 2009 2010 2011 2012 2013 2014 2015 2016 2017 2018 2019 2020 2021 2022 2023 2024 2025 2026 2027 2028 2029 2030 2031 2032 2033 2034 2035 2036 2037 2038 2039 2040 2041 2042 2043 2044 2045 2046 2047 2048 2049 2050 2051 2052 2053 2054 2055 2056 2057 2058 2059 2060 2061 2062 2063 2064 2065 2066 2067 2068 2069 2070 2071 2072 2073 2074 2075 2076 2077 2078 2079 2080 2081 2082 2083 2084 2085 2086 2087 2088 2089 2090 2091 2092 2093 2094 2095 2096 2097 2098 2099 2100 2101 2102 2103 2104 2105 2106 2107 2108 2109 2110 2111 2112 2113 2114 2115 2116 2117 2118 2119 2120 2121 2122 2123 2124 2125 2126 2127 2128 2129 2130 2131 2132 2133 2134 2135 2136 2137 2138 2139 2140 2141 2142 2143 2144 2145 2146 2147 2148 2149 2150 2151 2152 2153 2154 2155 2156 2157 2158 2159 2160 2161 2162 2163 2164 2165 2166 2167 2168 2169 2170 2171 2172 2173 2174 2175 2176 2177 2178 2179 2180 2181 2182 2183 2184 2185 2186 2187 2188 2189 2190 2191 2192 2193 2194 2195 2196 2197 2198 2199 2200 2201 2202 2203 2204 2205 2206 2207 2208 2209 2210 2211 2212 2213 2214 2215 2216 2217 2218 2219 2220 2221 2222 2223 2224 2225 2226 2227 2228 2229 2230 2231 2232 2233 2234 2235 2236 2237 2238 2239 2240 2241 2242 2243 2244 2245 2246 2247 2248 2249 2250 2251 2252 2253 2254 2255 2256 2257 2258 2259 2260 2261 2262 2263 2264 2265 2266 2267 2268 2269 2270 2271 2272 2273 2274 2275 2276 2277 2278 2279 2280 2281 2282 2283 2284 2285 2286 2287 2288 2289 2290 2291 2292 2293 2294 2295 2296 2297 2298 2299 2300 2301 2302 2303 2304 2305 2306 2307 2308 2309 2310 2311 2312 2313 2314 2315 2316 2317 2318 2319 2320 2321 2322 2323 2324 2325 2326 2327 2328 2329 2330 2331 2332 2333 2334 2335 2336 2337 2338 2339 2340 2341 2342 2343 2344 2345 2346 2347 2348 2349 2350 2351 2352 2353 2354 2355 2356 2357 2358 2359 2360 2361 2362 2363 2364 2365 2366 2367 2368 2369 2370 2371 2372 2373 2374 2375 2376 2377 2378 2379 2380 2381 2382 2383 2384 2385 2386 2387 2388 2389 2390 2391 2392 2393 2394 2395 2396 2397 2398 2399 2400 2401 2402 2403 2404 2405 2406 2407 2408 2409 2410 2411 2412 2413 2414 2415 2416 2417 2418 2419 2420 2421 2422 2423 2424 2425 2426 2427 2428 2429 2430 2431 2432 2433 2434 2435 2436 2437 2438 2439 2440 2441 2442 2443 2444 2445 2446 2447 2448 2449 2450 2451 2452 2453 2454 2455 2456 2457 2458 2459 2460 2461 2462 2463 2464 2465 2466 2467 2468 2469 2470 2471 2472 2473 2474 2475 2476 2477 2478 2479 2480 2481 2482 2483 2484 2485 2486 2487 2488 2489 2490 2491 2492 2493 2494 2495 2496 2497 2498 2499 2500 2501 2502 2503 2504 2505 2506 2507 2508 2509 2510 2511 2512 2513 2514 2515 2516 2517 2518 2519 2520 2521 2522 2523 2524 2525 2526 2527 2528 2529 2530 2531 2532 2533 2534 2535 2536 2537 2538 2539 2540 2541 2542 2543 2544 2545 2546 2547 2548 2549 2550 2551 2552 2553 2554 2555 2556 2557 2558 2559 2560 2561 2562 2563 2564 2565 2566 2567 2568 2569 2570 2571 2572 2573 2574 2575 2576 2577 2578 2579 2580 2581 2582 2583 2584 2585 2586 2587 2588 2589 2590 2591 2592 2593 2594 2595 2596 2597 2598 2599 2600 2601 2602 2603 2604 2605 2606 2607 2608 2609 2610 2611 2612 2613 2614 2615 2616 2617 2618 2619 2620 2621 2622 2623 2624 2625 2626 2627 2628 2629 2630 2631 2632 2633 2634 2635 2636 2637 2638 2639 2640 2641 2642 2643 2644 2645 2646 2647 2648 2649 2650 2651 2652 2653 2654 2655 2656 2657 2658 2659 2660 2661 2662 2663 2664 2665 2666 2667 2668 2669 2670 2671 2672 2673 2674 2675 2676 2677 2678 2679 2680 2681 2682 2683 2684 2685 2686 2687 2688

[illegible]

(10 of 15)

Every man that cometh into the world,"

"That was the true light which brought
Every man that cometh into the world

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

1000 1000 1000
1000 1000 1000

1944-1945

مجلسه اول در روز پنجشنبه ۱۳۰۲/۱۲/۱۵

ה' תשס"ח חרף אל ז' יום ראשון

1912-1913. 1912-1913. 1912-1913.

שם המלך - יצחק

هزارن جي تعداد ۾ ڪيائون ۽ ناس ڪرڻ جي ڪر
گريون ٿا. ڪبير صاحب فرمائين ٿا:
”هندو ڪهت هت، رام همارا، مسلمان رحمانا،
آپس ۾ ڏوٽو ٿي مورت هت، موم ڪوٺو نهين جاتا.“
انهن ۽ ڪيتري نه خون خراپي ٿي آهي. ڪيترا ٻار پٽين ٿيا
انهن ۽ ڪيتريون عورتون وڌوائون ٿيون آهن ۽ پوءِ اسين ان ۾
فخر وٺي پاڻ کي مذهب جا زڪرالا سمجهون ٿا، پاڻ کي ڌرم
جا شهيد سڏايون ٿا. جيڪڏهن هڪٻئي کي قتل ڪرڻ
سان ۽ خدا جي خلعت جو خون وهائڻ سان ئي، پرماتما ملي
سگهي ته ان کان سستو سرڌو ۽ آسان طريقو ڀيرو ڪهڙو ئي
سگهي ٿو؟ پر اسانجو راءِ خيال غلط آهي. جنهنجو پرماتما
سان پيار آهي اهو پرماتما جي خلعت ۽ مخلوق سان نه پيار
ڪري ٿو. جيڪڏهن پرماتما هڪ آهي ۽ ان پرماتما تي سڀني
کي پيدا ڪيو آهي ۽ هر هڪ جي اندر هو ڀڻ ويٺو آهي ۽
هر هڪ کي پنهنجي اندر ئي ان پرماتما جي ڪرڻ
آهي، پوءِ جيڪو ڪنهن سان نفرت ٿو ڪري ته هو
پرماتما سان نفرت ٿو ڪري. جيڪڏهن ڪا قوم ٻيءَ قوم
کي ٻرو پلو ڪوئي ٿي ۽ ڪو مذهب ٻئي مذهب وارن جي
خون جو پياسي آهي ته منهنجي خيال موجب ان قوم ۽ مذهب
ڏندو اڃا مالڪ جي ملڻ جو شرق ۽ پيار پيدا ٿيو ئي
ڪونهي ڇاڪاڻ ته جنهن کي ان پرماتما سان پيار آهي اهو
پرماتما جي مخلوق سان نه ضرور پيار ڪندو. جي
ڪنهن سان نفرت ڪريون ٿا ته اسين ان پرماتما سان
نفرت ڪري رهيا آهيون جو ان جي اندر ويٺو آهي ۽
هن کي پيدا ڪيو آهي. ڳرو ٿاڻڪ صاحب فرمائين ٿا:
”جيا جنت سڀ ٿسدي، سينا ڪا سوئي،
منڊا ڪس نون آڪيئي، جو دوجا هرتي.“

صاحب نه سنجھائين ٿا :

”نقلي مندر مسجدون ۾ ڄائي صد افسوس هٿه ،

قدروني مسجد ڪا ساڪن ، دڪ اٿاڻي ڪي ٿئي .“

سائين ٻلي شاهه ڪيترو نه بي ڌڙڪ فرمائين ٿا :

”ڀٽ نمازان چڪر وڙي ڪلهي ڏي سر سياهي ،

ٻلي نون شه اندرون مليا ، ڀٽي ڦري لوڪائي .“

وري ٻئي هنڌ فرمائين ٿا :

”بيد قران پڙه پڙه ٿئي ،

سجدي ڪردان گهس گئي مٿي ،

نه رب ٿيرت نه رب مڪي ،

جس پاڻا تس دل وچ يار .“

ڪهڙي نه افسوس جي ڳالهه آهي ته جيڪي جابون اسان

پرمانا جي رهڻ لاءِ ٺاهيون آهن ، اسين انهن هنڌن تي

پرمانا جي تلاش ڪري رهيا آهيون پر جنهن شرير ۾

پرمانا ويندو آهي ، اهو شرير نه مالڪ جي ڳولا ۾ رات ڏينهن

دڪ پوڳي رهيو آهي . جيڪڏهن ڪو سڄي ۾ سڄو

گردوارو ، مندر يا مسجد يا ديول آهي ته اهو صرف اسانجو

پنهنجو شرير آهي . اها جاءِ پرمانا پنهنجي رهڻ لاءِ خود

ٻڌائي آهي ۽ ان جي اندر ئي هو پاڻ ويندو آهي . ڪير

صاحب جو فرمان آهي :

”سب گهٽ پورن پور رهيا هٿه ، آڌ پرش نر ٻائي .“

سينت پال نه هن شرير کي زندهه پرمانا جو مندر ڪري

بيان ڪيو آهي يعني ته اهو مندر جنهنجي اندر زندهه خدا

وهي ٿو . دشمن مين نه هن شرير کي نر نارائڻي ڏيهه ڪري

گولڻو آهي . اها ڏيهه جا پرمانا خود پيدا ڪئي آهي ۽

جنهنجي اندر اهو پرمانا خود ويندو آهي ۽ ان ڏيهه جي

اندر ئي اسانجي آتما پرمانا کي پاڻ جو فخر حاصل ڪري

گورو رامداس صاحب نه فرمائين ٿا:

”سدا حضور دور نه ڄاڻو، رچنا جن رچائي.“

اهڙي طرح دادو صاحب فرمائين ٿا:

”دادو جيءَ نه ڄاڻي رام ڪو، رام جيءَ ڪي پاس،

گورو ڪي شيدا وهه ٻاهر، ٿاڻي ڦري اداس.“

دور ڪڍي ٿو دور هٿ، رام رهيا ڀر پور

نئون بن سوڙهي نهي، ٿاڻي اوڻي ڪٽ دور.

ڪوئي دورڙي دوارڪا، ڪوئي ڪاشي ڄانهن،

ڪوئي مٿرا ڪو چلي، صاحب گهٽ هي مانهن.

سڀ گهٽ ماهين رام هٿ، ڀر لا ٻوڙهي ڪوئي،

سوئي ٻوڙهي رام ڪو، جو رام سنيهي هونئي.“

چون ٿا ته جنهن پرماتما دنيا جي رچنا ڪئي آهي، اهو

ڇوڙيهه ئي ڪلاڪ توهان سان گڏ آهي. پر اسين دنيا جا

جيءَ ڏيهه ۽ شير جي اندر وڃي ڪڏهين نه پرماتما جي ڪوڙ

ڪرڻ جي ڪوشش ڪونه ٿا ڪريون. هميشه اُنڪي پا نه

جهنگلن ۽ ٻهاڙن ۾ ڳولڻ جي ڪوشش ڪريون ٿا، يا گرڻن

۽ پوئين ۾ پاڻڻ چاهيون ٿا، يا سمجهون ٿا ته هو گورو دارن،

مندرن، مسجدن يا ديولين ۾ ئي ملي سگهندو. ڪڏهين

خيال ايندو آهي ته هو ڪٿي آسمان جي پٺيان لڪي ويندو

آهي، ليڪن جنهن جاءِ تي اهو پرماتما آهي اُن هنڌ نه

للاش ڪريون ڪونه ٿا. گورو نانڪ صاحب فرمائين ٿا:

”گورمڪ هروي سو ڪايا ڪرچي، هور سب ڀرم ڀلائين.“

يعني جيڪي مالڪ جا اصلي ڀڳت ۽ پيارا آهن ۽ جنڪي

ڪنهن سنت مهاتما جي صحبت ملي چڪي آهي، اهي

پرماتما کي شير ۽ ڏيهه جي اندر ڳولهن ٿا. باقي سڀ دنيا

جا جيءَ ڀرمڻ ۾ ڦاسي هٿ ٿي پيا ڀڙڪن. سائين

ਪੰ ੧੩੬ ਪੰ ੧੩੭

[illegible]

“တရားတရား ငှို ငှို၊ တရား ငှို ငှို၊
 ငှို တရား၊ ငှို တရား၊ ငှို တရား၊ ငှို တရား။”

"Kingdom of God is within you."

۲ : ۱ - ۳ - ۴ - ۵ - ۶ - ۷ - ۸ - ۹ - ۱۰ - ۱۱ - ۱۲

சென்னை, 13.12.2019

ମୂଲ୍ୟ ୧୯୯୯ ଟଙ୍କା ମଧ୍ୟରେ ୧୩୯୯ ଟଙ୍କା ଓ ବାକି ୮୦୦ ଟଙ୍କା

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਹਰਿ ॥ ੧ ॥

[illegible][illegible][illegible]

၁၇၇၈ ခုနှစ် ဇူလိုင်လ ၁၅ ရက်နေ့၊
 ၁၇၇၉ ခုနှစ် ဇူလိုင်လ ၁၅ ရက်နေ့၊

ཕྱི་ལོ་ ༡༩༥༦ ལོར་བོད་ཀྱི་སྐད་འགྲན་ཁྲིམས་པུ་ཤིང་གི་ཚོགས་ཆེན་གྱིས་

[Faint handwritten notes at the bottom of the page]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

၇၂၂

[illegible]

١٠٠٠
 ١٠٠٠

[Faint handwritten notes at the bottom of page 68]

၁၂၂

۲۳
يعني جنهن پرمائا ساري جڳه کي زندگي بخشي آهي،
هن دنيا جي رچنا ڪئي آهي ۽ جو پرمائا سڀ جو دانا
آهي ۽ جو سڀني جي سنڀال ۽ رکوالي ڪري ٿو اهو پرمائا
هن شرير ۾ رهيو، وري ٻئي هنڌ سمجهائين ٿا:

”اس گها مه اُڪت پندارا،

نس وچ وسي هر الڪ اپارا.“

هيءُ جو اسانجو شرير آهي اهو نه رڳو آتما جي رهڻ جي
غلام آهي پر اهو پرمائا جو الڪ ۽ اکر آهي سو به هن غلام
يعني شرير اندر آهي. وري ٻئي هنڌ لکين ٿا:

”ڪايا اندر آبي وسي، الڪ نه لکيا جاني،

من مک مگڙ بوجهي ناهين، باهر ڀالن جاني.“

اهو پرمائا شرير اندر ويٺو آهي ۽ اسين ان پرمائا کي
ٻاهرين اکين جي ذريعي ٻاهر ڳولڻ جي ڪوشش ڪريون
ٿا. اهو اسانکي نظر ڪيئن اچي سگهندو. اسين من مک،
گنوار ۽ نادان آهيون. ڄا وستر اسانجي گهر اندر آهي سا
ٻاهر ڳولهي رهيا آهيون. ڪيترن صاحبن چيو آهي ته
آهي. فرمائين ٿا:

”جهون نل ۾ نيل هٿ، جهون چٽمق ۾ آڱ،

نيرا پر پتر نجه، مين، ڄاڱ سڪي نو ڄاڱ.“

وري فرمائين ٿا:

”جهون نينون ۾ پتلي، نيون خالق گهٽ ماهين،

مورڪ لوڳ جاني ناهين، باهر ڀوندين جاتين.“

ڄا ڪارن جڳ ڀونديا، سو ٿو هٿ، گهٽ ماهين،

پر د ڏيا ڀرم ڪا، ٿاڻي سوجهي ناهين.“

جهڙيءَ طرح نون ۾ نيل آهي ۽ پتر ۾ آڱ آهي اهڙيءَ

طرح پرمائا به اسانجي شرير جي اندر آهي. ڇيئن اکين جي

۱ کانسواء چارئي ورن نيچ آهن. پلٽو صاحب به اسانکي ائين
ئي سمجهائين ٿا:

”پلٽو اونچي جات ڪا مت ڪوئي ڪري اهنڪار،
صاحب کي درٻار ۾ ڪيول پگتي پيار.“

يعني مالڪ جي درٻار ۾ صرف پگتي ۽ پيار جو ئي قدر
آهي. پگتي ۽ پيار ئي اسانکي واپس وٺي وڃي مالڪ سان
ملائيندو. ڪوبه من ۾ اهو وڃي نه رکي ته مان برهمڻ جي
گهر ٻڌا ٿيو آهيان تنهنڪري مان ئي رڳو برهماڻا کي پاڻي
سگهندس يا مان هندو يا عيسائي ٻڌو آهيان تنهنڪري
مان مالڪ سان ملي سگهندس يا ڪوئي اهو خيال ڪري نه
مون نيچ ذات ۾ جنم ورتو آهي تنهنڪري مان مالڪ جي
پگتي ڪري ئي نه سگهندس. گورو نانڪ صاحب جن نه
ذات پاٽ جو ايتري قدر ڪنهن ڪيو آهي جو فرمائين ٿا:

”هن نامي سڀ نيچ جات هٿ، وشٽا کي ڪيڙي هروين.“
جو مالڪ جي نام جي ڪمائي نه ٿو ڪري ان کان وڌيڪ
نيچ ذات وارو ڪير ئي سگهي ٿو ڇاڪاڻ ته موت کانپوءِ هن
کي وشٽا يا گندگيءَ جو ڪيڙو ٿيڻو پوندو. وري فرمائين ٿا:

”جس نام ردي سڙي وڏو راجا،
جس نام ردي تس ٻوري ڪاجا،
جس نام ردي سو سب لي اونچا،
نام بنا ٻرم جوني هوڇا.“

جس نام ردي سو جيون مڪتا،
جس نام ردي تس سب هي جگتا.“

ٻئي هنڌ به فرمائين ٿا:

”سبد وڙسي سڙي جن اوچا، سڄي آپ سما و نڀان.“

.....
”نانڪ هور پاتشاهيان ڪوڙ پتان، نام رتي پاتشاه.“

جنهن پرمانا پنهنجي حڪم سان هن سرشتيءَ جي رچنا
 ڪئي آهي، جيڪڏهن ان جو ڪر رنگ روپ يا ذات
 پات ناهي ته اسانجي آتما جي ذات پات ڪيئن ٿي سگهي
 ٿي؟ ان مان ٿي نڪتي آهي ۽ ان ۾ ئي وڃي سمائجڻ چاهي
 ٿي. ڪنهن به مثالها جي پاڻيءَ جي ڇڙيءَ طرح ڪرڻ
 ڪنداسين ته ڏسڻ ۾ ايندو ته هر هڪ مثالها اسان جي خيال
 کي ذات پات، قوم مذهب ۽ ملڪ جي پيدائڻ کان مٿي
 ڪٿي، اسان ۾ مالڪ جي پڳيءَ جو شرق ۽ ڀرپور پيدا
 ڪريو. جيڪڏهن سمجھجي ڪاه ذات پات ڪونهي ته ان
 جي قطري جي ڪهڙي ذات پات ٿي سگهي ٿي؟ جيڪڏهن
 سورج جي ڪاه، قوم يا ملڪ ڪونهي ته انجي هڪ معمولي
 ڪرڻي جي ڪهڙي قوم يا مذهب ٿي سگهي ٿي؟ هي سڀ
 ذات پات ڇا جهڳڙا انسان جا خرد پيدا ڪيل آهن. پرمانا
 ته صرف انسان پيدا ڪيو آهي. اسان پاڻ کي ذات پات،
 قوم، مذهب ۽ ملڪ جي فرقن ۾ ورهائي ڇڏيو آهي ۽ هڪ
 ٻئي جي پيدائڻ ۾ ڦاسي پيا آهيون. گورو نانڪ صاحب جن
 ”جڏي ليڪا منگيئي، ٿئي ديه جات نه جاني.“

جنهن هنڌ اسان جي ڪرمن جو حساب ڪتاب ٿيندو آهي
 اسانجي ذات پات جي پڇا ڳاڇا ڪونه ٿيندي ۽ نڪي
 ان جو شرير آهي بهجي سگهي ٿو. هيءَ شرير يا نه باهه ۾
 ٿو وڃي ٿو يا مٽيءَ ۾ پوري وڃي ٿو. ان ذات پات، قوم ۽
 مذهب جو تعلق نه هن سرير سان هتي ٿي رهجي وڃي ٿو
 ۽ نه ڪنهن جي ذات پات جاري وڃي ٿي ۽ ڪنهن جي
 ٿي ڏيڃي وڃي ٿي. اهڙيءَ طرح ڪير صاحب به
 ٿي پاڻيءَ ۾ اُڀرڻ ڪن ٿا؛
 ته ذات پات به ڪونهي، هر ڪرڻي سوهڙو ڪا هوندي.

پرمانا هڪ آهي

سڀني مهاتمانن جو اهو ئي تجربو آهي ته جنهن مالڪ کي اسين ملڻ چاهيون ٿا اهو هڪ پرمانا آهي. ائين ناهي ته هندن جو هڪڙو نه مسلمان يا سکن ۽ عيساين جو ڪو ٻيو پرمانا آهي. گورو نانڪ صاحب فرمائين ٿا:

”ايڪ پتا ايڪس ڪي هم بالڪ،

سيمان جيتان ڪا ايڪر دانا.“

شيخ سعدي چوي ٿو:

”بني آدم اعضائي يڪ ديگر اند،

چو در آفرينش ز يڪ جوهر اند.“

يعني سڀ انسان هڪ ئي جوهر مان پيدا ٿيا آهن ۽ هڪ ٻئي جا ڀائر آهن. جيڪي به جيئو اسين دنيا ۾ ڏسي رهيا آهيون، انهن سڀني کي پيدا ڪرڻ وارو هڪ ئي پرمانا آهي. مسلمان فقير ان پرمانا کي رب العالمين سڏين ٿا يعني ته ساري عالم جو هڪ ئي رب آهي ۽ شروع کان اهو پرمانا هلندو اچيٿو. ائين ناهي ته پهريائين ڪو ٻيو پرمانا هو ۽ هاڻي ڪو ٻيو. گورو نانڪ صاحب چن فرمائين ٿا:

”جگ جيون ساڇا ايڪر دانا.“

يعني ته ساري جڳهه کي جيون ڏيڻ وارو هڪ ئي دانا آهي ۽ اهو لافاني آهي. هو مرن ۽ جنم جي چڪر ۾ نه ٿو ٽاسي. ڇپ صاحب جي شروع ۾ ئي گورو نانڪ صاحب بلڪل چٽيءَ طرح فرمائين ٿا:

”ايڪو ستنام ڪرنا پرڪ“

”آد سچ، جڳاد سچ، هٿ پي سچ، نانڪ هو سي پي سچ.“

يعني تجربو ڪندي ڪندي مون کي پنهنجي اندر ۾ هڪ اهڙي شڪتِي حاصل ٿي آهي جا آد جڳاد کان هلندي آئي آهي ۽ جيڪا ڪڏهن به ناس يا فنا نه ٿي ٿئي. اهو

اسان کي مان وڏائي ڏين ٿا، اسان جا چاوس ۽ سرگس
 ڪڍن ٿا، اخبارن ۾ اسانجي ساراه ڪن ٿا ته اسانجو من ڦرا
 نه ٿو سمائي. پر انهن ليڊرن جي حالت به روز پڙهون ٿا ۽
 رات رات حڪومت جو تختو بدلائي وڃي ٿو ۽ مخالف پارٽي
 جو زور وڌي وڃي ٿو. پوءِ انهن ساڳين ئي ليڊرن کي
 ڪڏهن گوليءَ جو شڪار ڪري ٿا ڇڏين ته ڪڏهن ڦاسيءَ
 جي تختي تي ٿا چاڙهين، ڪڏهن جيل ۾ ٿا وجهن ته
 ڪڏهن انهن جي اخبارن ۾ مٿي پليٽ ٿا ڪن. جنهن
 حڪومت جي نشي ۽ دنيا جي مان وڏائيءَ ۾ سڪ ڳولھڻ
 جي ڪوشش ڪيسين، اُها ئي اسانجي واسطي دڪ جو ڪارڻ
 ٿي پئجي. گورو نانڪ صاحب جن فرماين ٿا :

”سڪ مانگت دڪ آ گل هوئي.“

مطلب ته هن دنيا ۾ اسان ڪڏهن به سڪ ۽ شائتي حاصل
 نه ڪري سگهنداسين. هي جيڪو ٿورو ڪجهه سڪ نظر
 اچي ٿو سو به وقت پئي دڪ ۾ بدلائي وڃي ٿو. سو مهالما
 پنهنجي آزمودي مان سمجهائين ٿا ته جيسين اسانجي آتما
 ۾ مائٽا سان ميلاپ نه ڪندي تيسين سڪ ۽ شائتي حاصل
 ڪري ٿي نه سگهندي. تن دولت ۽ دنيا جي شڪلين مان
 به اسان اوڻو ئي عرصو سڪ شائتي پائي سگهنداسين
 جيستائين اسانجو خيال مالڪ جي پگتيءَ طرف هوندو. مثال
 طور ڪو ٻار پنهنجي پيءُ جي آڱر پڪڙي نمائش ۾ ٺاهو
 ڏسڻ وڃي ٿو. هنکي نمائش ۾ هر ڇيڙ ڏاڍي خوبصورت ۽
 سٺي ٿي لڳي. ڪٿي اڇليون پري رهيون آهن ته ڪٿي
 قسمن قسمن کيل ٿي رهيا آهن ۽ ڪٿي رانديڪن ۽ مٺاين
 سان سڃايل دوکان آهن. ٻار سمجهي ٿو ته هنکي اها خوشي
 نمائش جي ساڙ و سامان مان ملي رهي آهي. پر جيڪڏهن
 غلطيءَ وچان هن کان پيءُ جو هٿ ڇڏائجي ٿو وڃي ته هر

تلسيداس صاحب جن به پنهنجي ٻاڻيءَ به دنيا جي دکن جي
باري به هن ريت فرمائين ٿا :

”ڪوئي توئن من دڪي ڪوئي نت آداس،

ايڪ ايڪ دڪ سڀن ڪو سڪي سدت ڪا داس.“

گورو نانڪ صاحب جن سمجهائين ٿا :

”نازڪ دڪيا سڀ سنسار،

سو سڪيا جو نام آڌار.“

مطلب ته سڀ دنيا جا جيو پنهنجي پنهنجي نموني دکن
۽ مصيبتن به مبتلا آهن. سڄو سڪ ۽ شانتي انهيءَ کي آهي
جنهن مالڪ جي پگتيءَ ۽ پريم جو آسرو ورتو آهي. اسين
جيو انهيءَ مالڪ کي وساري ويٺا آهيون. نه هن جي کوج
ٿا ڪريون ۽ نه ئي هن جي پگتيءَ طرف اسانجو خيال آهي.
دنيا جي شڪلين ۽ پدارثن به سڪ ۽ شانتي ڳولها جي ڪوشش
ڪري رهيا آهيون. هر هڪ جو راءِ اهو اٿي ته جيترو اسين
انهيءَ پرمالڪ کي وساري سڪ ۽ شانتيءَ کي ڳولهي رهيا
آهيون اولهروئي زياده دڪ پرڳي رهيا آهيون. ڇاڪاڻ ته
دنيا جون شڪليون ۽ پدارت جن جي حاصل ڪرڻ به اسين
سڪ ۽ شانتي ڳولهي رهيا آهيون اهي عارضي ۽ ناسونت
آهن تنهن ڪري انهن جو سڪ به عارضي ۽ ناسونت آهي.
جيستائين اسان کي اها وسهه نه ٿي ملي جا ڪڏهين به ناس
۽ فنا نه ٿئي ۽ اسين انهيءَ کي پنهنجو نه بنايون تيستائين
اسين سڄو ۽ دائمي سڪ ڪيئن ٿا حاصل ڪري سگهون؟
ڇاڪاڻ ته جنهن چيز جي حاصل ڪرڻ به خوشي ٿي ٿئي تنهن
جي وڃڻ يا جدائيءَ به ايترو ئي دڪ به ٿئي ٿو. پنهنجي
زندگيءَ کي ڇاڇي ڏسون ته شاديءَ جي وقت من کي ڪيڏي
نه خوشي ٿيڻي به جيڪڏهن انهيءَ جيون ساڻيءَ سان جهڳڙو
يا مڻيڍ ٿئي ٿو ته اسين ڪيترو نه دڪي ٿا ٿيون. جنهن

سرامي جن فرمائين ٿا:

”ڏاڏا اٺي چلو پائي ٻراڻي ڏيڻس ڪيئن رهيا.“

آٽما ۽ ڀرواٽما

گورو نانڪ صاحب جن فرمائين ٿا:

”پر سڄي تي سدا سهاڳن.“

اسانجي آٽما استري آهي ۽ ڀرواٽما سندس پتي آهي ۽
هيءَ آٽما روپي استري، ڀرواٽما روپي پتي ۽ جي ڇرڻن ۾
پهچي سڄي سهاڳڻ ٿي سگهيتي ۽ خوشي پراپت ڪري
سگهيتي. وڌيڪ گورو صاحب فرمائين ٿا:

”جنهي گهر جاتا آيا سي سڳي پائي.“

جيڪي پنهنجي اصل گهر (سڳند) واپس پهچي وڃن
ٿا اهي هميشه جي واسطي سک ۽ شائتي حاصل ڪندا.
ڪٺ آپشد ۾ به ٺيڪيٽا کي پيراج اهڙي جواب ڏنو آهي.
مؤلانا روم صاحب به فرمائين ٿا:

”اين جهان زندان و ماژندا نيان،

حضرة ڪن زندان و خود را دارهان.“

يعني هي جهان قيد خانو آهي جنهن ۾ اسين قيد آهيون.
قيدخاني جي ڇت ۾ سوراخ ڪري هتان پڄي نڪرو.

ڪيترن ئي مهاڻائن آٽما ۽ ڀرواٽما جي رشتي کي استريءَ
۽ پتيءَ جي نالي سان پڙيو آهي. ڇاڪاڻ ته استري هميشه

پتيءَ جي ڇرڻن ۾ سک ۽ شائتي حاصل ڪري سگهيتي.
جيڪڏهن ڪا استري پنهنجي پتيءَ جي ڇرڻن کان جدا ٿي

جي پوءِ چاهي هن کي ڪيتري به دنيا جي عزت ۽ مان

جي، ڪيترو به مال ملڪيت ڏجي ته هن جي من کي

ڪ ۽ شائتي نه ملندي. هوءَ پنهنجي پتيءَ جي پيار ۾ ئي

ڪ ۽ شائتي حاصل ڪري سگهندي. تنهنڪري گورو اچن

[illegible]

مظبوط جتي ٻائي ڇڏيون نه ڪندا پنهنجو اثر ئي نه ڪندا.
 دنيا جا مسئلا نه اڄ تائين ڪنهن حل ڪيا آهن نه ڪير هميشه
 واسطي حل ڪري سگهي ٿو پر مهاتمان جي ابدش انوسار
 هلي اسين پنهنجو خيال ايترو اوچو ڪري سگهون ٿا جو
 دنياوي دڪ ۽ سک جون حالتون اسان تي اثر ئي نه ڪن.
 يسوع مسيح اٿيل پر فرمائين ٿا:

“For I have come to set a man at variance
 against his father and the daughter against her mother,
 and the daughter-in-law against her mother-in-law.”

(Matthew 10: 34: 35)

يعني مان آيو آهيان ته پٽ کي پنهنجي پيءُ کان، ڌيءُ کي
 پنهنجي ماءُ کان ۽ ننهن کي پنهنجي سس کان جدا ڪريان.
 ارٿاءِ: مان هن دنيا کي سک ۽ شائتيءَ جي نگري بڻائڻ
 ڪونه آيو آهيان بلڪ جيون کي هتان آزاد ڪرائڻ آيو آهيان.
 ماءُ پيءُ، پٽن ڌيئرن وغيره جا پاڻ پر موه جا ٻڌن ڪاٺا
 آيو آهيان. هڪ ٻئي سان لڳن، موه ۽ پيار جي زنجيرن
 کي ڪاٺي، انهن کي آزاد ڪرڻ آيو آهيان. بيمشڪ دنيا پر
 پر آپڪاري نيتائن ۽ پنگتي سڌارڪن جي ڪمي ڪونه پئي
 رهي آهي ۽ دنيا پر ڪيترائي نيڪ، رحم دل ۽
 پر آپڪاري انسان پيدا ٿيندا رهيا آهن پر سنت مهاتمانون
 جيڪو پر آپڪار اچي هن دنيا پر ڪٿا اهڙو پر آپڪار پئي
 ڪنهنجو نٿو ٿي سگهي. مثال طور ڪنهن جيل خاني اندر
 ڪيترائي قيدي آهن. هڪ پر آپڪاري شخص ڏٺو ته گرميءَ
 جي موسم آهي ۽ قيدين کي پيئڻ لاءِ ٿڌو پاڻي نٿو ملي.
 هو رحم ڪاٺي کين برف وارو ٿڌو شربت پيارڻ جو بندوبست
 ڪري ٿو. گویا هن قيدين تي هڪ چڱو پر آپڪار ڪيو. پر
 هڪ پر آپڪاري محسوس ڪري ٿو ته قيدين کي ڪاٺ لاءِ کاڌو

[illegible]

نه ڪنهن قوم يا مذهب يا ملڪ جو لڙائي جهڳڙو هلندو ئي
رهيو. انهن لڙاين ۾ ڪيترن غريبن جو خون ٿئي ٿو ۽ ڪهڙي
طرح نه زالون وڌ وائون ٿيون ۽ ٻار پيئڻ پئجن ٿا. جنهن دنيا ۾ اها
حالت آهي جو روئيءَ ۽ ڪهڙي جي واسطي انسان کي ٽڙ ٽوڙ ۽
پٽڪڙ ٿو پوي ۽ هروقت موت جو ڊپ لڳو رهيو اهڙي
نگريءَ جي اندر اسين سک ۽ شائتي ڪيئن ٿا حاصل ڪري
سگهون؟ اها حالت ڏسي ڪروڙ تانڪ صاحب جن پڪارين ٿا:
”تانڪ ڏکيا سب سنسار“

سهجو پاڻي چوڻي:

”ڏنڻي ڏکيئي سڀي، نرڏن ڏک ڪا روپ“
تلي داس جن رامايڻ ۾ فرمائين ٿا:

”سڪل چيو جگ دين ڏکاري“

جيڪڏهن انساني ديهيءَ ۾ اچي اسين هن دنيا ۾ سک ۽
شائتي حاصل ٿا ڪري سگهون ته پوءِ ڪهڙي جڙن ۾ سک
۽ شائتي حاصل ڪري سگهنداسين؟ مهالما ابدش ڪن ٿا ته
هن دنيا ۾ گڏهن به هميشه جي واسطي ڪنهن کي نه سک
۽ شائتي حاصل نه ٿي سگهندي ڇاڪاڻ ته هيءَ دنيا سک
۽ ڏک جو گهر آهي، پڇ ۽ پاپ جي نگري آهي. اسين
پڙهي رهيا آهيون. چڱيءَ طرح دنيا ۾ اچي سک ۽ ڏک
اهڙو شخص ٺوهانڪي نه ملندو جنهن کي هن ديهيءَ ۾ فقط
سک ئي سک ملندا هجن ۽ جنهن گڏهن به ڏک نه ڏٺا هجن
۽ ڪنهن کي ڏک ئي ڏک سهڻا پيا هجن ۽ گڏهن به سک
۽ ساهه نه کنيو هجي. انيومان ڏسجي ٿو ته جيڪڏهن ڏه
جنهن سک جا گذرن ٿا ته ڪجهه ڏينهن ڏکن کي به منهن
ڏئي ٿو پوي. وري جي ڏه ڏينهن ڏکن جا ڏسجن ٿا ته
ان ڪجهه ڏينهن سک جا به اچن ٿا. جيڪي به ڏک

41 U

سهجو ٻائي چويٿي: —

”پشو پنڇي، نر، سر، اُسر، جالپر، ڪيٽ، پتنگ،

سب هي اٿئي ڪرم ڪي، سهجو ٿانا رنگ.“

ڇا راجا، ڇا پرجا، ڇا امير ڇا غريب، ڇا استري ڇا
پرڻ، اسين سڀ دنيا جا جيو ڪرم ۾ جي ڇار ۾ ڦاٿا پيا
آهيون. انهن ڪرم جي ڪارڻ جنهن ۾ جدو ۾ وڃي جنم
ونظر پويو اتي دڪ ٿي دڪ ۽ مصيبتون ٿي مصيبتون سهڻيون
ٻڌون ٿيون. پر ماڻها ڪان وڇڙي ڪهڙيءَ ۾ جدو ۾ اسين
ڪڏهن به سک ۽ ٻڌائي حاصل نٿا ڪري سگهون. ڪنهن
۾ جدو ڪي ڪٿي چڱيءَ طرح ڇاڇي ڏسو ته ان ۾ سک پراپت
ٿي سگهين ٿا؟ هر روز انسان جي خوراڪ لاءِ هزارين قسمن
جي جانورن جو ڪوس ڪيو وڃي ٿو. ڪهڙي نه بي رحميءَ
سان انهن جي گلن تي چريون هلايون وڃن ٿيون. ڇا اهڙن
جانورن جهڙوڪ ٻڪري، وي، گاءُ، مرغِي وغيره جي جدو
۾ اسين سک حاصل ڪري سگهون ٿا؟ اسانجي خيال ۾
ڪڏهن آيو آهي ته جيڪڏهن اسانڪي پنهنجن ڪرم جي
ڪري انهن جرڻين ۾ وڃڻو پوي ۽ اسانجو گردن انهن جي
چرين ۽ ڪهاڙين جي هيٺان هجي ته پوءِ اسان جي جيڪو
ڪهڙي حالت ٿئي! ڊاڪٽر جڏهن انجنيڪشن هڻڻ لاءِ رڳو
سهڙي سٽي گرم ڪندو آهي تڏهن ڪيترن ماڻهن جو شير
ڊپ وڃان ڏڪڻ شروع ڪندو آهي جيتوڻيڪ اها ڳالهه
اسانجي فائدي لاءِ هوندي آهي. هاڻي اُت جي جدو جي
حالت ٿي ويچار ڪريو. ڪهڙي نه طرح مٿائڻس اوجھو لڏيل
هوندو آهي ۽ ڪيئن نه ان کي زوريءَ اڳيان ڇڪيندا آهن.
ٽانگي ۾ ٻڌل گهوڙي جي حالت اسين عام طرح ڏسندا
آهيون. ڪيترا نه ماڻهوان ٽانگي تي سوار هوندا آهن ۽ ڪيئن
ڏڙا ڏڙ مٿائڻس ڇاڪن جو وسڪارو ٻيو ٻوندو آهي.

يعني آتما جي اندر پرماتما آهي ۽ پرماتما جي اندر آتما آهي. مثال طور اڙ جو وڻ ڪيڏو نه وڏو ٿيندو آهي ۽ ان جو ٻج ڪيڏو ننڍڙو ٿيندو آهي. جيڪڏهن ڪير اسان کي سمجهائي نه هن ننڍڙي ٻج جي اندر هيڏو وڏو ٻڙ جو وڻ آهي ته اها ڳالهه آسانيءَ سان اسانجي سمجهه ۾ نه ايندي. ليڪن جنهن وقت اسين انهيءَ ٻج کي زمين ۾ ڇڏيون ٿا ۽ ان جي سنڀال ڪريون ٿا تڏهن آهستي آهستي ننڍڙي ٻوٽي مان وڏي ڪيڏو نه وڏو اڙ جو وڻ ٿي پوي ٿو ۽ پوءِ ئي اسان کي پتو پوي ٿو ته انهيءَ ننڍڙي ٻج ۾ ايڏو وڏو ٻڙ جو وڻ آهي ۽ انهيءَ وڻ جي اندر ٻڙ جو ننڍڙو ٻج سمائل آهي. اهڙي طرح گورو نالڪ صاحب جن فرمائين ٿا ته جڏهن گورو مڪن ۽ مهاتمان جي اڀديش انوسار هلي پنهنجي اندر کوچ ڪنداسين ته اسان کي پتو پوندو ته آتما جي اندر پرماتما آهي ۽ جنهن پرماتما جي اسين ڳولا ۾ آهيون اهو اسانجي آتما جي اندر آهي. تنهن ڪري اسانجي آتما انهيءَ پرماتما جي انس آهي.

گرمڻ جو قانون

اسين انهيءَ پرماتما کان وڇڙي هن مايا جي چار ۾ ڦاسي پيا آهيون. هت اچي اسانجي آتما من سان ناتو رکيو آهي. اسانجو من اندرين جي پڙڳن، وشي وڪارن، شرابن ڪبابن ۽ دنيوي ڌنڌن جو عاشق آهي. من جيڪي ڪرم ڪري ٿو تن جو ڦل ساڻس گڏ آتما کي نه پرڳڻو پوي ٿو، ڇاڪاڻ ته آتما ۽ من جي پاڻ ۾ ڳنڍ ٻڌل آهي. روشن مين هن دنيا کي 'ڪرم پومي' ڪري ڪوٺيو آهي. محمد صاحب هن دنيا کي آخرت جي ڪيتي ڪوٺيو آهي. سندن قول آهي

”الدنيا مزرعة الآخرة.“

ਸਤਿ ਨਾਮੁ ॥੧॥

[illegible]

၇၈၁ ဗို ရှိ ၁၃၆၆ ကိုယ်ပိုင် ငွေ :-

၂၈၂ နံပါတ် ၁၃၇၇ ခုနှစ်၊ ဇူလိုင်လ ၁၅ ရက်နေ့

۱۰۰

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

جہاں اس کی بات

“*የግሪክ ጥናት*”

:- ၁။ မိမိ၏ နာမည်ကို မှတ်တမ်းတင်ရန်

"اسماء بنت ابی بکر"

:- ۱) در صورتی که

ਸਾਨੂੰ ਚੰਗੇ ਆਦਮੀ ਪੜ੍ਹਾਓ ਤੇ ਬੁਰੇ ਆਦਮੀ ਨਾ ਪੜ੍ਹਾਓ।

၁၆၆၆ ခုနှစ်၊ ဇူလိုင်လ ၁၀ ရက်နေ့၊ နေပြည်တော်၊ မြန်မာနိုင်ငံတော်

၂၁။ အထက်ပါအတိုင်း နှစ်စဉ် ပြန်လည် စစ်ဆေးရန် တောင်းဆိုခြင်း

မိမိတို့အား ချစ်ခင်အားပေးကြည့်ရှုပါ။

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

[illegible][illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ကျေးဇူးတင်စွာ ဂုဏ်ထူးချီးမြှင့်ပါရန် တောင်းဆိုပါသည်။

1. *Chlorophyll* is the green pigment found in plants which helps in the process of photosynthesis.

۱- کتب و اسناد خطی و چاپی در دسترس قرار گیرد.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

၁၄၆၂ ခုနှစ်၊ ဇန်နဝါရီလ ၁၁ ရက်နေ့၊ နေပြည်တော်၊ မြန်မာနိုင်ငံတော်

سنت مارگ

”شڪر ڪند نباض گڙ ما ڪيون ماڃها دڌ،

سڀي وستو مٺيان رب نه پڄن تڏ.“

(بابا فرید)

(ڪند، مصري، نباض، ماڪي ۽ ميهن جو ڪپو، رهي سڀ
مٺا آهن پر اي پر مٺا! جيڪر تو ۾ مٺاڄ آهي، جيڪر
تبهنجي پڳتيءَ ۾ آند آهي انهيءَ سان ڪنهن به دٺيري
رس جو مقابلو ڪونهي.)

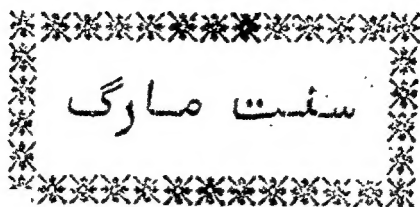
ڪهڙي به قوم، ڪهڙي به مذهب، ڪهڙي به ملڪ يا
وقت ۾ جيڪي به مهالما آيا آهن انهن سڀني جو ساڳيو اٿڻ
۽ ساڳيو اپدیش آهي. هو دنيا ۾ قوم يا مذهب لاهڻ نٿا اچن
۽ نه ئي اسان کي هڪ ٻئي سان لڙڻ ۽ جهڳڙڻ سڀڪارين ٿا.
بلڪ هو اسان جي اندر مالڪ جي پڳتيءَ جو چاه ۽ پيار
پيدا ڪرڻ واسطي ۽ ديهه جي بندن کان آزاد ڪري، مالڪ
سان ملائق واسطي اچن ٿا. ليڪن اسين دنيا جا جيئو اهڙن
مالڪ جي پڳتن ۽ پيارن جي وچ ۾ بعد ٻاهر مڪي ٿيو پٿون ۽
ڪرم ڪانڊ ۾ قاسمو وڃون ۽ انهن مهالمان جي اصلي اٿيو ۽
اپدیش ڪري وساريو ڇڏيون. تنهن کانسواءِ هنن جي سڄي
تعليم ۽ روحانيت ڪي قومن ۽ ملڪن جي ننڍڙن ننڍڙن
دائرن ۾ بند ڪري، هڪ ٻئي سان لڙڻ ۽ جهڳڙڻ شروع

مهاڳ۔

سنت مارگ براداسرامی ستسنگ بیاس جی موجود ہے۔
سنت ستگورو مهاراج چرنسنگھ جن سنت مت یا گورو مت
جی مول سدائن کی نہایت سُرل ۽ سندریٰ رنگ سان سمجھایو
آھی۔ دراصل، ہی پستک مهاراج جن سندن سنگره کیل
”سنت باڻی“ جی یومکا کری لکيو هو پر روحانیت جی
جکیاسن جی لاپ واسطی انھیء کی الگ پستک جی
روپ ۾ چھاپو ویو۔

سنت مارگ جا هندي، اردو، گرمکي ۽ انگريزي
چاپا اڳيئي ظاهر ٿي چڪا آهن ۽ هتي هي چاپو سنڌي
جنٽا ۽ خاص کری ستسنگين ۽ پرمارٿي پريمين لاء پيش
ڪجي ٿو. شري کرشن باباڻي هن ڪتاب جو سنڌي انواد
ڪيو ۽ شري منگهارام ديال چھانڻو جو پڙهند ڪيو. اسين انهن
سچڻن جا سندن شيوا لاء ٿورائتا آهيون۔

کي. ایل. کنا
سیکرپٽري



سنت مارگ

